श्री. वासुदेव योग प्रतिष्ठान

उद्‌बोधन

उत्तिष्ठत जाग्रत

प्राप्य वरान्निबोधत ।

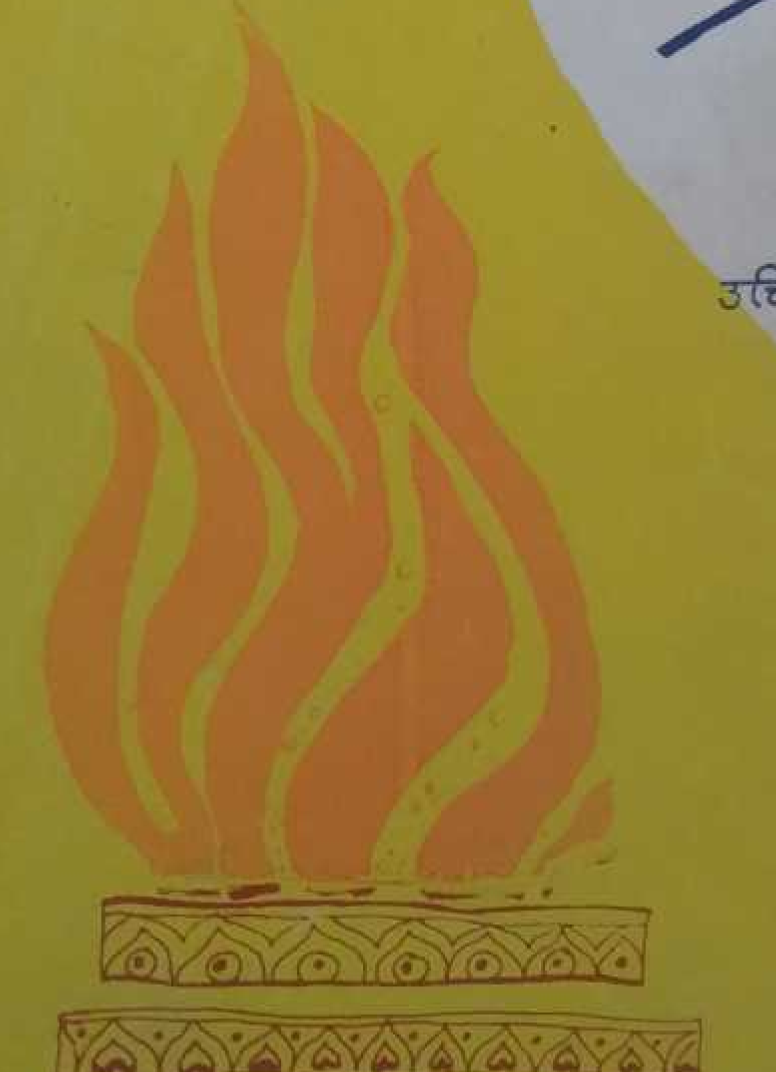

दिनांक २२ जुलै १९९१

उद्बोधन

कुलं पवित्रं जननी कृतार्था
वसुंधरा पुण्यवतीच तेन ।
अपार संवित्सुख सागरेऽ स्मिन
लीनं परे ब्रह्मणी यस्य चेत: ।।

संपादक

डॉ. आर. पी. पांडे
एम. बी. बी. एस. एम. डी.
प्राध्या. जवाहरलाल नेहरु मेडिकल कालीज, वर्धा

सौ. उषा घरोटे

श्री वासुदेव योग प्रतिष्ठान, वर्धा
द्वारा प्रकाशित

*

प्रकाशक :
श्री वासुदेव योग प्रतिष्ठान
कारंजा रोड, ता. जि. वर्धा
कार्यालय :
१० श्रीनिवास कालोनी,
वर्धा

*

मुद्रक :
श्री तु. ना. चौधरी
साम्ययोग मुद्रणालय
जे. सी. कुमारप्पा मार्ग,
वर्धा

—उद्‌बोधन—

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्यवरान्निबोधत

योग विद्या का अभ्यास इस देश की प्राचीन परंपरा है। वेद, उपनिषत्, गीता तथा दर्शन जिस परम-आत्मा का गुणगान करते है उसे पाने का यह राजमार्ग है। यह मार्ग सभी संप्रदायोकी संकुचित सीमाओंको लांघकर उस परम सत्ता तक पहुंचता हैं। और यही इस महान देशकी धरोहर है।

इसी पवित्र उद्देश को लेकर इच्छुक साधकों को समर्थ मार्गदर्शन उपलब्ध कराने हेतू वर्धा मे श्री वासुदेव योग प्रतिष्ठान की स्थापना की गई हैं। वर्धा के पास ही कारंजा रोड पर आश्रम निर्माण की योजना भी बनाई गई है। योजना की पूर्तता समाज के श्रद्धालुओं के सहयोग पर निर्भर हैं। पू. गुरुदेव का निवास स्थान आश्रम स्थल के निकट ही है। वह पूर्ण हो गया है।

प. पू. गुरुदेव महायोगी श्री वासुदेवजी तिवारी का शिष्य-परिवार अब बृहत् रूप धारण कर चुका है। योगाभ्यास मे समाधि की अनुभूति करनेवाले साधक इस परिवार में हैं। पू. गुरुदेव की प्रारंभ से यही इच्छा रही है की इस आत्मकल्याण की विद्या के द्वार सभी मुमुक्षुओंको खुले रहे तथा उन्हे योग्य मार्गदर्शन मिले।

मानसिक कमजोरी, भोलापन तथा कामनाओंकी पूर्ति करने की आतुरता का लाभ कुछ स्वार्थी तत्व उठाते है। आत्मविद्या के परम कल्याणकारी क्षेत्र में अवांछित तत्वोंकी यह घुसपैठ ही समाज मे अनेक भ्रांतियोंको फैलाती है। इन सब भ्रांतियों को हटाकर पवित्र आत्मविद्या का प्रसार करना, तथा अपने जीवन में जो इसका प्रत्यक्ष आचरण कर रहे हैं ऐसे साधकों को समाज के सन्मुख उदाहरण के रूप मे रखना समय की आवश्यकता है।

२३ जुलाई १९९१ को पू. गुरुदेव ८४ वे वर्ष मे पदार्पण कर रहे हैं। इस शुभ वेला पर उनके श्री चरणोंमे शत शत प्रणाम! इसी पावन पर्व पर उद्‌बोधन का यह अंक आपके हाथों मे देते हुवे हमे अतीव हर्ष हो रहा हैं। इस स्मरणिका को प्रकाशित करने में हमारे अनेक विज्ञापन दाता, मुद्रक श्री तु. ना. चौधरी (साम्ययोग मुद्रणालय, वर्धा) तथा गुरुबंधुओं का सहयोग प्राप्त हुआ हैं। उन सबके हम आभारी हैं।

इति शम।

बाबा तकवाले

अध्यक्ष, श्री वासुदेव योग प्रतिष्ठान, वर्धा

श्री वासुदेव योग प्रतिष्ठान की स्मरणिका

अनुक्रमणिका

अ. नं.	लेख	लेखक	पेज नं.
१)	सत (कविता)	डा. श्रीमति कुलवंत कोर पंधेर	१
२)	सत्संग (पू. गुरुदेव के प्रवचनपर आधारित)		२
३)	लेसर किरणें एवं यौगिक दिव्य शक्ति एक समन्वय	डा. व्ही. ए. शिंदे, डा. शरद राठौर एवं डा. एम पी. सिंह	५
४)	क्या योगी अपनी अस्मिता मात्र से अनेक चित्तों का निर्माण कर सकता है ?		११
५)	अदभुत प्रसंग	श्री बी. एस. भटजीवाले, इंदौर	१८
६)	सत्संग (कविता)	डा कुलवंत कौर पंधेर	२१
७)	संत शिरोमणि श्री तुकाराम महाराज		२३
८)	हम किसकी उपासना करते है ?	सौ उषा धरोटे, वर्धा	३६
९)	सत्संगति का महत्व (पू. गुरुदेव के प्रवचन पर आधारीत उद्धरण)		४०
१०)	योग क्या है ?		४२
११)	पू. गुरुदेव की कृपा	श्री रमेशचंद्र मिश्र, रायपुर	५१
१२)	जनम जनम से साथ गुरुका	श्री रमेशचंद्र मिश्र रायपुर	५३

श्री वासुदेव धाम निर्माण प्रकल्प को हमारी शुभ कामनाएं

रामलुभाया ठाकुरदास सतीजा

(कपडेके थोक बेपारी **वर्धा**)

आर. पी. रनीत

(सिव्हिल कॉन्ट्रॅक्टर, **वर्धा**)

प. पू. गुरुदेव के ८४ वे जन्म दिवस पर हार्दिक बधाई

वंदना टाईल्स

इंदिरा मार्केट, **वर्धा**

सत

डॉ. श्रीमती कुलवंत कौर पंधेर
प्राध्यापक, मेडिकल कालिज, ग्वालियर

सब कुछ जिसने किया है धारण
वो हैं इक सत, वो है इक सत ।

वो है आदि जुगादि सत सत
है भी सच होस्सी भी सच ।
(आज भी है आगे भी है सच)

सत को धारण करके सतगुरु
संदेशा दे तत्सत तत्सत ।

इस सत को गर पाना चाहो
सतगुरु से लो गुरु की गुरुमत ।

इस सत को तुम रूप कोई दो,
दे दो चाहे कोई नाम ।

ईश्वर या अल्लाह कहो तुम
वाहेगुरु या बोलो राम ।

सब हैं एक सभी में समाया
वो ही इक सत वो ही इक सत

सत मत छोडो सूरिमा, सत छोडे पत जाय ।
सत के बांधे लक्ष्मी फेरि मिलेगी आय ।

सत से ही है हम सबकी पत
सत के बिन तो कोई नहीं गत ।

सत के संग ही बंधे हुए हैं
दान धर्म, शांति लक्ष्मी सब ।

सत्संग

(पूज्य गुरुदेव महायोगी श्री वासुदेवजी के प्रवचन पर आधारित)

लोग कहते हैं. भई अब तो सत्संग में जाना है। सत्संग में जाना तो ठीक है लेकिन सत्संगति क्या है ? लोग पोथी पढते है। अब पोथी के बारे में पढा है।

"पोथी पढ पढ जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई अक्षर प्रेम के, पढे सो पंडित होय॥"

ये ढाई अक्षर प्रेम शब्द के हैं। ऐसा मैंने बहुतों से सुना है। हमारी समझ मे ये दोनों नही आए– सत्संगति और ये प्रेम। लोग कहते हैं हम सत्संग में जाते हैं। वहां सत्संग खूब होता है। हम कहते है– ठीक है बाबा। पर हमारी समझ में नहीं आता था। बहुत वर्षो बाद हमारे ख्याल में ये बात आयी। हिंदी में एक दोहा मैंने पढा था–

तात स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरिय तुला एक अंग।
तूल न ताहि सकल मिलि, जो सुख लव सत्संग॥

तात माने तौ (तौ = दोनों) दोनों को तात कहते हैं। ये दोनों क्या है ? ये दो हैं– स्वर्ग और अपवर्ग। इसका अर्थ ये हुआ कि स्वर्ग और अपवर्ग का सुख तराजू के एक पलडे में डालो और लव मात्र का सत्संग दूसरे में, तो सत्संग का पलडा भारी हो जायेगा। लव माने एक निमिष। निमिष माने पलक झपकने को जितना समय लगे उतना। सत्संग माने सत् के दर्शन हो जाना। इतने कम समय के लिए भी सत् के माने आत्मा के दर्शन हो जायें तो भी वह स्वर्ग और मोक्ष के सुख से बढकर होता है।

लोग पुण्य करते हैं स्वर्ग जाने के लिए। तपस्या करते हैं मोक्ष (अपवर्ग) पाने के लिए। हमको एक दोहा और मिला–

सत मत छांडो सूरिमा. सत छांडे पत जाय।
सत के बांधे लक्ष्मी, फेरि मिलेगी आय॥

ये संत वाणी है। वे कहते हैं– सत् छोडोगे तो प्रतिष्ठा जायेगी और सत् को पकड़ के रहोगे तो गई हुई लक्ष्मी (वैभव) फिर से वापस आयेगी।

लोग सत्संगति जैसे बडे बडे शब्द बोलते हैं। उनकी दृष्टि में धार्मिक किताबें पढना एकादशी वगैरह व्रत करना, मंदिर जाना, कीर्तन सुनना यही सत्संग है। पर इस सत्संग से तो हमारी दुर्दैवी जाती नहीं और ऊपर के दोहे में तो दिया है कि "तूल न ताहि सकल मिलि, जो सुख लव सत्संग"। तो फिर सत् क्या है। आत्म रूपी सत्ता ही सत् है। अगर उसका एक

निमिष मात्र भी संग हो जाय तो उसका पलड़ा बाकी सब पलडों से भारी हो जाता है। वे सब ऊपर टंग जाते हैं। इसके पासंग में भी नहीं आते।

दूसरा जो दोहा हमने कहा,–. . "सत छोडे पत जाय" . . . उसके विषय में एक कहानी है। एक धनाढ्य सेठ था । उसके लडके, बहू, बाल-बच्चे सब थे। बडा व्यापार था। सत्य पर निष्ठा थी। बडा वैभवसम्पन्न परिवार था उसका। दानी था। लोगों के सुख-दुख की परवाह करता था। सेठ थक गया। लडकों ने कारोबार संभाला। उन्होंने दुख तो कभी देखा ही नही था। अपने व्यवहार से समाज के लोग दुखी होते हैं इसका उन्हें पता ही नहीं था। अपनी औरत और बाल-बच्चे और उनका सुख इतना ही उनके नजर में था। व्यापार में जहां से मिले, जैसा भी मिले, लोगोंसे पैसा निचोडना शुरू किया। लोग दुखी हो गये। बोलने लगे कि सेठजी बडे अच्छे थे। लेकिन उनके बच्चे बहुत लूटते हैं। अब सेठजी के घर भी भाग्य ने करवट ली। बुरे दिन आ गये। एक दिन एक आदमी आया और सेठजी को नमस्ते किया।

सेठजी– "कौन हो भाई ?"
आगंतुक– "तुम्हारा पुण्य हूं"
सेठ– क्या कहना है तुम्हारा ?
आगंतुक– हमारा अब यहां कोई काम नहीं, सो हम जाते है।
सेठ– ठीक है भाई जाइये।

अब सेठजी के पास दूसरा आदमी आता है। वो भी नमस्ते करता है और कहता है– "मैं दान हूं : अब मेरी कोई जरूरत नहीं है अब तक यहां दान-पुण्य होता था। अब सब बंद हो गया है, हम जाते हैं।" दान भी चला जाता है।

कुछ देर बाद एक महिला आती है। सेठजी पूछते हैं– 'आप कौन हैं ?' महिला उत्तर देती है– 'मैं शांति हूं। आपके घर मे दूसरों पर उपकार किया जाता था तो मैं आपके पास रहती थी। अब लोगों को लूटना शुरू हो गया है। अब मेरा यहां रहना तो कठिन है। मे जाती हूं।' वह भी चली गई।

अब दूसरी महिला आती है। बडी सुंदर है। अलंकार आभूषणों से लदी हुई है। आती है और नमस्ते करके खडी रहती है। सेठजी पूछते हैं.– 'आप कौन हैं ?' महिला जवाब देती है– 'मैं लक्ष्मी हूं।' सेठजी ने पूछा 'लक्ष्मीजी आप आज कैसे आ गई।' लक्ष्मीजी उत्तर देती है– 'मेरे सहचर दान, पुण्य, शांति आदि सब चले गये। उनके सिवाय तो मैं रह नही सकती। अब मुझे भी इजाजत दे दीजिये।' वह भी चली जाती है।

अब धीरे-धीरे सब सूना होने लगता है। लक्ष्मी के जाने के बाद सब वैभव जाता है। इधर-उधर सब उदासी छा जाती है। सब कारबार उल्टा हो जाता है। जो लोग आकर सर झुकाते थे, वही अब आँखे दिखाने लगे। अब ऐसी विपन्नावस्था में एक आदमी सेठजी के पास पहुंचता है।

सेठजी पूछते हैं– "अब तो हमारे पास कुछ नहीं है भाई सब चला गया। अब आने वाले आप कौन हो और किसलिए आये हो।"

आगंतुक कहता है– "मैं सत्य हूं। मुझे भी अब जाने की इजाजत दे दीजिये।"

सेठजी बोले– "सब गया तो परवाह नहीं तुम नहीं जा सकते। तुम तो मेरा जीवन हो। तुम्हारे बिना मैं नहीं रह सकता।"

सेठजी सत्य को छोडने के लिए तैयार नहीं होते। सत्य वहीं रहता है। दूसरे दिन से शांति, दान, पुण्य, लक्ष्मी सब वापस आ जाते हैं।

जीवन में सत्य ही ऐसी बात है जो दान, पुण्य, शांति, लक्ष्मी सबका सेनापति है। सत्य के लिए हमें जीना है। सत्य के लिए मरना है यही है– "सत मत छोडो सूरिमा, सत छोडो पत जाय।" जो कुछ थोडा बहुत सत हमारे पास है उसी के कारण हमारी प्रतिष्ठा है। समाज में हम अच्छे माने जाते हैं। सत्य को धारण करने से ही मनुष्य महान होता है। सत्य किताब पढने से नहीं समझा जा सकता। वह आचरण का विषय है। "सत्यं वद् धर्मम् चर।"

गुरु द्रोणाचार्य के पास युधिष्ठिर ने केवल दो ही शब्द पढे– "सत्यम् वद् धर्मम् चर।" परीक्षा के समय बाकी सब विद्यार्थी उत्तीर्ण हो गये। युधिष्ठिर मौन रहे क्योंकि, धर्म का तो आचरण करना पडता है और पढाई होते तक समाज में कोई भी व्यवहार करने का काम नही पडा था। तो सत्य के आधार पर धर्माचरण करने का कोई काम नहीं पडा था। धर्म का आचरण शब्दों से युधिष्ठिर कैसे बता सकते थे, सो वे चुप रह गये।

मौन रहने के कारण गुरु द्रोणाचार्य ने जो दंड दिया वह उन्होंने सह लिया। युधिष्ठिर ने सोचा– अभी तक तो मुझे सत्य की कोई अनुभूति नहीं हुई है। उसकी धारणा कैसे होती है– जिसे धर्म कहते हैं उसका भी मुझे अनुभव नही आया, फिर गुरुदेव को क्या बतलाऊं।

कितना सही विचार किया था युधिष्ठिर ने। धारणा ही तो धर्म है। "धारणात् धर्म इत्युच्यते"। सत की धारणा ही हमारा धर्म है। इसको नहीं छोडना चाहिए, चाहे हमारा प्राण ही क्यों न निकल जाय। इसकी धारणा के कारण युधिष्ठिर युद्ध में भी स्थिर रहते थे। इसीलिए उसका नाम युधिष्ठिर था।

सत है आत्मा। वह महाशक्ति है। अभ्यास करते-करते आप जैसे जैसे अंदर जायेंगे, वैसे वैसे उस सत के गुण आपमें आते जायेंगे। आपके सांसारिक काम भी धीरे धीरे बन जायेंगे और जीवन में शांति का भी अनुभव होगा। अभ्यास के ही द्वारा उस सत के साथ आपका संग हो जायेगा। यही सच्चा सत्संग है। ऐसा सत्संग अगर निमिषमात्र भी हो जाय तो यह जीवन सफल हो जायेगा और आपका कल्याण हो जायेगा।

परम पूज्य गुरुजी के ८४ वे जन्म दिवस के उपलक्षमें हार्दिक बधाईयाँ

सिन्ध रेडियो हाऊस

गंज रोड

नवापारा-राजिम

जि. रायपुर (म. प्र.) ४९३८८१

विक्रेता:— फिलिप्स, बुश, मरफी रेडिओ एवं ओरिएन्ट, सिन्नी, उषा, पंखे एवं बिजली सामान।

प्रो. अशोक सायरानी

परम पूज्य गुरुजी के श्री चरणो में कोटिश: नमन

अरुणोदय लाटरी सेंटर

नवापारा-राजिम

जि. रायपुर (म. प्र.) ४९३८८१

प्रो. सुगनामल तेजवानी

लेसर किरणें एवं यौगिक दिव्य शक्ति–एक समन्वय

डा. व्ही. ए. शिंदे
रिटा. डीन मेडिकल कालेज
रीवा

डा. शरद राठौर
प्रा. भौतिकशास्त्र, होलकर कालेज
इंदौर

डा. एम. पी. सिंह
जॉ. डाय. मेडि. सर्व्हि. म. प्र. शासन
भोपाल

लेसर बनने की प्रक्रिया में, दर्पणों के मध्य किरणों के विकरण (रेडियेशन) से रेजोनेटिंग कैविटी प्रकाशमान होकर उच्च होल्टेज खिचाव पैदा करती है जिसके कारण एलेक्ट्रान गतिवर्धित (एक्सीलरेटेड) हो जाते हैं, जिसके फलस्वरुप वे कैविटी के अन्दर के गैस एटमस् को एक्साइट कर देते हैं। स्पानटेनियस इमिशन द्वारा उत्पन्न फोटान पम्प की भाँति कार्य कर पापुलेशन इनवर्शन एवं स्टिमुलेटेड इमिशन पैदा करता है।

लेसर किरणें निकलने के पूर्व, रेजोनेटिंग कैविटी के अन्दर दो दर्पणों के मध्य, बहुत बार रिफलेक्ट होती हैं अतः जो न्हास (लासेज) होते हैं उन्हें तब तक पूर्ण किया जाता रहता है जब तक थर्मल इक्विलिब्रियम (औष्मिक साम्य) स्थापित नही होती। इस प्रक्रिया के स्थापित हो जाने के फलस्वरुप प्रकाश एम्लीफाइड होता है और एम्पलीफाइड लेसर प्रकाश की किरणे दर्पण के छिद्र द्वारा, सशक्त, कोहेरेन्ट, मोनोक्रोमेटिक लेसर बीम के रूप मे निकलती है।

सेरिब्रो स्पाइनल फ्लूइड (सी एस. एफ) सुषुम्ना एवं मस्तिष्क के वेन्ट्रीकुलर सिस्टम में रहता है, इस सिस्टम रूपी ट्यूब को भी पम्प प्रणाली से पल्स ट्यूनेबिल लेसर के रूप में उपयोग कर सकते है। इसकी किसी भी फ्रीक्वेन्सी (इनर्जी) में चक्रों के अनुसार ट्यून किया जा सकता है। पल्स लेसर अति अल्पावधि (वेरी शार्ट ड्यूरेशन) एवं अत्यधिक गतिवान होते है।

ध्यान की गहरी अवस्था में जब शक्ति रुप प्राण (क्वानटम आफ डिवाइन इनर्जी) अपने पैरों व शरीर के अन्य समीपस्थ अंगों से सिमट कर योनिकंध (पेरीनियल बाडी पर केन्द्रित होता है, तब ध्यान द्वारा इस स्थान पर हाइ वोल्टेज खिचाव उत्पन्न कर कुंडलिनी शक्ति जो सुषुप्ता अवस्था में साढेतीन क्वायल्स् के रुप में योनिकंध (पेरिनियल बाडी) पर स्थित है, स्टिमुलेट एवं इनरजाइज (उद्दीप्त एवं उर्जायित) होकर अपने क्वायलस् को छोडकर मूलाधार तथा मूलाधार से उपर की ओर सेन्ट्रल कैनाल आफ स्पाइनल कार्ड अर्थात सुषुम्ना में, टेनेलाइजेशन पद्वति से प्रवेश कर उपर की ओर अग्रसर होती हुई, सुषुम्ना से फोर्थ वेन्ट्रिकल (चतुर्थ गुहा) और फिर एक्वीडक्ट (मध्य मस्तिष्क की मध्य नलिका) से होती हुई, थर्ड वेन्ट्रिकल (तृतीय गुहा) और फिर वहां से इन्टर वेन्ट्रिकुलर फोरामेन से होती हुई, दोनी लेटरल वेन्ट्रिकलस् (पार्श्व गुहाओ) से होकर पूरे मस्तिष्क मे चहुंओर घूम कर पीनियल ग्रंथि पर केन्द्रित होकर भृकुटी मध्य पर बोध या प्रगट होती है और यही आज्ञाचक्र है।

सुषुम्ना एवं मस्तिष्क के चारों वेन्ट्रिकल्स की तुलना लेसर की रेजोनेन्ट कैविटी से की जा सकती है। जिस प्रकार लेसर की टयूब में एलेक्ट्रान इनरजाइज होकर गैस एटमस् को भिन्न भिन्न इनरजी स्तर पर एक्साइट करके, स्पानटेनियस रेडिएशन तथा उसके पश्चात स्टिमुलेटेड रेडियेशन उत्पन्न करके, रेजोनेन्स कैविटी में एम्लीफाई करके, एक सशक्त लेसर बीम का सृजन करते है, उसी प्रकार ध्यान की गहरी अवस्था मे शक्ति रुपा प्राण (क्वानटम आफ डिवाइन इनर्जी) की एक किरण, जब टनेलाइज होकर सुषुम्ना तथा वेन्ट्रीकुलर सिस्टम मे प्रवेश कर, चित्र मे दर्शाये गये विभिन्न चक्रों का भेदन करती हुई उपर की ओर जाती है। चक्र का भेदन करते समय जिस चक्र से इनर्जी प्राप्त करता है, उसी की संगत का प्रभाव रहता है, तथा ऊर्जा प्राप्त कर स्टिमुलेटेड रेडियेशन इमिट करता है, जो सुषुम्ना एवं वेन्ट्रिकिल्स की रेजोनेन्स कैविटी में एम्प्लीफाई होकर टेलीपेथी जैसे कार्य भी संभव करता है। ये कार्य साधारण व्यक्ति की कल्पना के परे तो हो सकते है, परन्तु सिद्ध योगी द्वारा संभव है। इस परिप्रेक्ष मे कुछ उदाहरण प्रस्तुत है।

उदाहरण- १) श्री बालासाहेब देशपान्डे जो बिलासपुर मे भूगोल के प्राध्यापक है, श्रद्धेय गुरुजी के पास नित्य दर्शनार्थ टिकरा पारा बिलासपुर में श्री एम बी ठाकरे के निवास पर आया करते थे, जहाँ गुरुजी ठहरे हुये थे। श्री देशपांडे, गुरुजी के निर्देशानुसार अंग्रेजी में पत्र लिखा करते थे। एक बार ऐसा घटित हुआ, कि श्री देशपांडे विश्वविद्यालयीन परीक्षाओ मे व्यस्त होने के कारण श्रद्धेय गुरुजी के पास

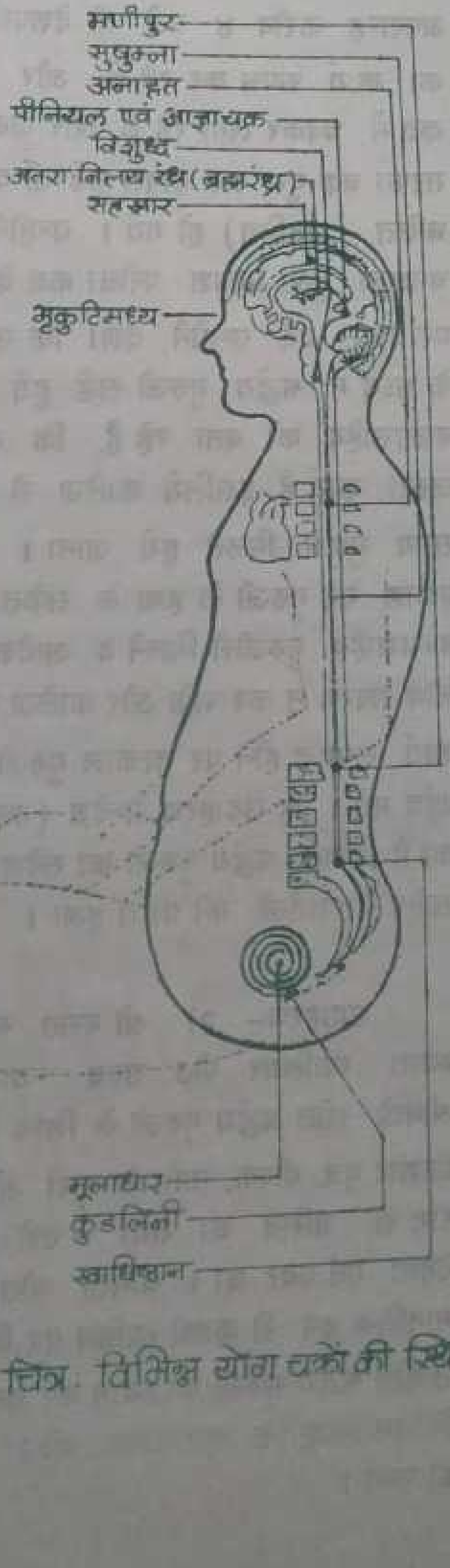

चित्र- विभिन्न योग चक्रों की स्थिती

नहीं आ सके। श्रद्धेय गुरुजी को एक पत्र का उत्तर अंग्रेजी में शीघ्र देना था, अतः श्री देशपांडे की तत्काल आवश्यकता थी। दूसरे दिन अपरान्ह करीब ४ बजे श्री देशपांडे परिवीक्षक का कार्य संपन्न कर रहे थे, और वह परीक्षा कक्ष में चक्कर लगा रहे थे, और जब वह एक-तरफा चक्र पूरा कर वापस मुडे तो वह आश्चर्य चकित (अचंभित) हो गये। उन्होने एक तेज चमकता हुआ प्रकाश परीक्षा कक्ष के प्रवेशद्वार पर देखा, एवं उन्होने देखा कि उस प्रकाश के मध्य में श्रद्धेय गुरुजी खडे हुये संकेत से बालासाहेब को बता रहे हैं. कि तुमसे कुछ जरुरी कार्य है, इसलिये कालेज से घर जाते समय मुझसे मिलते हुये जाना। इस दिव्य प्रकाश एत गुरुजी के हाथ के संकेत के बाद, बालासाहेब गुरुजीसे मिलने व आदेश पाने का लोभ संवरण न कर सके और कालेज से परिवीक्षा कार्य समाप्त होने पर तत्काल गुरुजी से मिलने पहुँच गये। यह उदाहरण सन्देश (कम्यूनिकेशन) का है जिसमें श्रद्धेय गुरुजी का संदेश श्री बाला-साहेब देशपांडेजी को प्राप्त हुआ।

उदाहरण– २) श्री बसंत खोत अधिवक्ता ग्वालियर पीठ उच्च न्यायालय एवं श्रीमती खोत श्रद्धेय गुरुजी के शिष्य है। उनका किशोर पुत्र, दीपक, नाभि के चारों ओर हरपीज रोग से ग्रसित था तथा उसे असहनीय वेदना एवं ज्वर था। श्रीमती खोत रात्रि में मानसिक रुप से काफी व्यथित एव चिंतित थीं। उन्होने श्रद्धेय गुरुजी का ध्यान कर उनसे सशक्त निवेदन किया कि पुत्र दीपक शीघ्र ही निरोग हो जावे।

घटनाक्रम में मध्यरात्रि के समय दरवाजे पर टक टक की आवाज आई। श्रीमती उमा खोत उठीं और द्वार खोला। द्वार खोलते ही वे आश्चर्य चकित रह गई उन्होंने देखा कि श्रद्धेय गुरुजी चमकते हुये प्रकाश मंडल से घिरे हुये सामने खडे है। वह स्तंभित होकर देखती रही कि श्रद्धेय गुरुजी कमरे में प्रवेश कर दीपक के पलंग के पास पहुँचे और उन्होंने उसके पेट के चारों ओर हाथ फेरा और फिर अदृश्य हो गये। दूसरे दिन प्रातः दीपक काफी स्वस्थ था और वह जल्दी ही ठीक हो गया।

यह उदाहरण रोग–निदान करने का है जिसमें श्रद्धेय गुरुजीने श्री दीपक को स्वास्थ लाभ पहुंचाया।

उदाहरण– ३) सन १९८३ की सितम्बर में श्रद्धेय गुरुजी, मुंगेली, जि बिलासपुर मे श्री प्रेमचन्द्र पारीख के यहाँ रह रहे थे। उनका बाहर जाने का कोई पूर्व नियोजित कार्यक्रम नही था. परन्तु श्रद्धेय गुरुजी को ऐसा भास हुआ कि एक महिला ट्रेन के डिब्बे मे सीढियो से चढकर अन्दर आई तो कुछ लोगों ने उस महिला को धक्का मारकर दरवाज़े से बाहर सीढियों की ओर ढकेल दिया है।

दूसरे दिन प्रातः श्रद्धेय गुरुजीका प्रवचन हो रहा था। उसी समय डा भानू गुप्ताजी उनसे मिलने आये तो श्रद्धेय गुरुजीने उनसे तत्काल रीवाँ पहुचाने के लिये कहा। डा. भानु जी चुप होकर सोचने लगे कि श्रद्धेय गुरुजी का अचानक प्रोग्राम कैसे बन गया। उन्होंने एक सप्ताह का समय मांगा। सप्ताह अंत उन्होंने श्रद्धेय गुरुजी को रीवा पहुंचाने की व्यवस्था की

श्रद्धेय गुरुजी के अचानक रीवॉं पहुँचने पर डा. शिन्दे और श्रीमती शिन्दे को आश्चर्य हुआ क्योंकि श्रद्धेय गुरुजी के कार्यक्रम तो पूर्ण रुपेण, पूर्व सूचित एवं पूर्व नियोजित होते है, परंतु श्रद्धेय गुरुजी को पाकर उन्हें बेहद खुशी हुई । एक दिन व्यतीत हुआ अगले दिन डॉ. मिसेज शिन्दे जब बरसात के कारण गीले कपडों को सुखाने के लिए, सीढिया चढकर उपर, रस्सी पर डालने गई, तब उन्हे ऐंसा आभास हुआ जैंसे किसीने उन्हे धक्का दिया और वह गिरकर सीढियों पर लुढकती हुई नीचे आ गई । इस दुर्घटना मे घातक परिणाम भी हो सकते थे और अक्सर होते है ।

गिरने के फलस्वरुप उन्हें सर पर एवं रीढ की हड्डी पर चोट लगने के लक्षण हुये जैसे चक्कर आना, पेशियों मे खिचाव एवं शक्ति-हीनता, तथा मस्तिष्क पर भारीपन । श्रीमती शिन्दे, श्रद्धेय गुरुजी के पास पहुंची। श्रद्धेय गुरुजी ने कहा जाओ लेटो और आराम करो । उसी समय सूचना मिलने पर डा. कान्हरे प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष सर्जरी विभाग आये और उन्होंने परीक्षणोपरान्त. एक माह के लिए पूर्ण आराम की सलाह दी ।

डा. शिदे दॉंई करवट लेटी हुई थी और आँखे बन्द थी । उन्हें ऐसा आभास हुआ कि श्रद्धेय गुरुजी का हाथ उनके सर पर रखा है और उन्होंने सर पर हाथ फेर कर हाथ को रीढ की हड्डी की ओर फेरा । इसके उपरान्त मिसेज शिन्दे को ऐसा लगा जैंसे कोई द्रव मस्तिष्क में बाई ओर से दाहिनी ओर गिरा और फिर रीढ की हड्डी के अन्दर नीचे की ओर जा रहा है । इसके पश्चात उन्हे काफी हल्कापन महसूस हुआ । दूसरे दिन उन्हे बिना किसी दवा के पूर्णतया आराम मिल गया और वह सामान्य कार्य करने लगी । मुंगेली मे स्वप्न की तरह देखा गया यह उदाहरण पूर्वाभास का है जो श्रद्धेय गरुजी को पहले से ही मुंगेली मे हुआ और वह सही सिद्ध हुआ ।

ऐसी अनेकानेक घटनायें श्रद्धेय गुरुजी की जीवनी में घटित होती रही है जो चमत्कार (मिरेकिल) न होकर आज के विज्ञानसिद्ध और शतसौनुभूत है, क्योंकि ध्यान योग एक वैज्ञानिक तरीका है और कोई भी जिज्ञासु इस बताये हुये तरीकों का प्रयोग कर परख सकता है ।

जब तक मानव केवल विषय सुख, धन ऐश्वर्य एवं प्रभुता में लिप्त हैं तब तक वे दैवी रहस्य को समझने मै असमर्थ रहेंगे ।

सामान्यतः मनुष्य का जीवन जाग्रत, स्वप्न, और सुषुप्ति, इन तीन अवस्थाओं तक ही सीमित रहता है । इस पथ पर अग्रसर होते हुये जब साधक, धारणा, ध्यान और समाधि के सम्मिलित रुप (त्रयमेकत्र संयम) में होता है, तब, बुद्धि में अतीन्द्रिय पदार्थो का प्रत्यक्ष ज्ञान होता है। जिसे सातिशय सर्वज्ञता का बीज कहा गया है । इस स्थिति को चतुर्थ श्रेणी (फोर्थ डायमेन्शन) कहते है। यही तुरिय अवस्था है। इस अवस्था मे साधक आज्ञाचक्र के स्तर पर पूर्णतः स्थिर होकर आत्म क्रीड की श्रेणी पर पहुंच जाता है। ऐसे सिद्ध योगी मानव हित के उद्देश्यों से प्रेरित होकर अद्‌भुत कार्य करने मे सक्षम होते हैं । परन्तु ऐसे कार्य चमत्कार न होकर पूर्णतः वैज्ञानिक आधार पर होते है । इसके अनेक उदाहरण हमारे सद्‌गुरुजी की जीवनी "दिव्याम्बु निमज्जन" पुस्तक में मिलते है एवं इसी पुस्तक में साधकों की अनुभूतियों मे कहीं कहीं झलकियां मिलती हैं । श्रद्धेय गुरुजी की पुस्तक को समझकर पढने एवं मनन करने का निवेदन है ।

००

महायोगी श्री वासुदेवजी महाराज के ८४ वे जन्मदिवस पर
हार्दिक बधाइयां

श्री राणी सती इंडस्ट्रीज
MIDC वर्धा

सब प्रकारकी शुद्ध दालों के निर्माता

श्री वासुदेव योग प्रतिष्ठान द्वारा निर्माणाधीन
श्री वासुदेव धाम
आश्रम प्रकल्प को हमारी शुभकामनायें

श्रीराम इंडस्ट्रीज
MIDC वर्धा

क्या योगी अपनी अस्मिता मात्र से अनेक चित्तों का निर्माण कर सकता है ?

—एक साधक

चित्त यह सर्व समावेशक संज्ञा है। चित्त में मन, बुद्धि, अहंकार आदि सब समाविष्ट है। इसे ही अन्तरण चतुष्टय कहते हैं। जिसे विराट में प्रकृति कहते है, उसे ही पिण्ड में चित्त कहते हैं। इस लेख का शीर्षक पढकर वाचक को भी बडा कुतूहल होगा। जो चित्त जन्म से ही प्रकृति निर्मित है क्या वह एक योगी अपनी अस्मिता द्वारा निर्माण कर सकता है ? यह तो आज तक सुने गए सभी चमत्कारों में सबसे बडा चमत्कार होगा। जिसका संबंध हमारी समझ में नहीं आता, उसे हम चमत्कार या चमत्कृति कहते है, यदि बुद्धि उसे समझने के लिए पात्र हो जाय तो वह चमत्कार न रहकर प्रकृति में घटित होनेवाली एक घटना मात्र रह जायेगी।

पातंजलि योगसूत्र में कैवल्यापाद का चौथा सूत्र है "निर्माणचित्तान्यस्मितामात्रात"। इसका अन्वय होगा अस्मिता मात्र से निर्माण चित्त होते है। योगी अस्मिता मात्र से निर्माण अर्थात चित्त को अपने संकल्प मात्र से निर्मित करता है। पातंजलि योग सूत्र पर भाष्य लिखनेवाले एक श्रेष्ठतम अधिकारी पुरुष श्री स्वामी ओमानंद तीर्थ अपने ग्रंथ में ऐसी शंका प्रदर्शित करते हैं कि महर्षि व्यास ने व्यास भाष्य में तथा भोजवृत्ति में जो कहा गया है कि योगी अपनी अस्मिता मात्र से चित्तों का निर्माण कर सकता है,— यह व्यासजी के तथा भोजवृति के मूल शब्द है, या किसी और पुरुष ने योग का अद्भूत चमत्कार दिखलाने के लिए एक समय में अनेक शरीर और चित्तों की कल्पना करके यह शब्द बढा दिए ?

यहां पाठको की सुविधा के लिए अस्मिता का स्पष्टीकरण देना उचित होगा। आत्मा से प्रकाशित चित्त ही अस्मिता है। आत्मा नाम पुरुष को अविद्या के कारण जीव रुप प्राप्त होता है। पुरुष द्रष्टा, क्रियारहित तथा निर्गुण है। चित्त अर्थात प्रकृति त्रिगुणमयी है। क्रियाओं से भरी हुई तथा अनेक क्रियाओं का निर्माण करनेवाली, क्रियाओं के परिणाम दिलानेवाली है। वह पुरुष से सर्वदा भिन्न है। परंतु अविद्या के कारण पुरुष अपने आपको चित्त ही समझ लेता है। इसे ही अस्मिता कहते है। योग दर्शन के साधन पाद के सूत्र ७ : मे इसकी परिभाषा की गई है जो इस प्रकार है—

इसका अर्थ यह हुआ कि द्रष्टा की शक्ति और दृष्य की दर्शन देने की शक्ति– ये दोनों भिन्न है। लेकिन जब द्रष्टा अपने आपको दृष्य ही समझ लेता है तब उसे अस्मिता कहते है।

कपिल मुनि का उदाहरण इस विषय के अभ्यासकों को ज्ञात है। कपिल मुनि ने योग बल से, अपने संकल्प से चित्त का निर्माण कर जिसका प्रयोजन केवल दूसरों के कल्याणार्थ ही था और जो चित्त कर्म विपाक के कारण जन्मतः निर्माण नही हुआ था, आसुरी ब्राह्मण को समाधि का अनुभव करा के सांख्य दर्शन का उपदेश किया।

प्राचीन समय का उदाहरण उसके पश्चात फिर कही देखने को मिलता है या नहीं यह योग मार्ग के अभ्यासकों के लिए अन्वेषण का उत्तम विषय है।

साधक अभ्यास करते करते जब समाधि अवस्था को प्राप्त होता है तब चित्त में ही परिवर्तन होता है। सत्व रज तमादि तीन गुणोंका विषम परिणाम ही चित्त निर्माण करता है। तीन गुणों की साम्यावस्था चित्तलय कहलाती है। उस अवस्था में चित्त का अस्तित्व ही नही रहता और साधक निर्बीज समाधि का अनुभव करता है। अत्यास में जैसे जैसे प्रगति होती है वैसे वैसे सत्व गुण बढता है। और अन्त में सत्वगुण भी संशुध्द हो जाता है। साधक संसार भय से मुक्त हो जाता है, इसे ही "अभय सत्व संशुद्धि" कहते है। जब चित्त में सभी समाविष्ट है तो मनुष्य की भौतिक देह की पेशियों से लेकर अन्तःकरण भी चित्त की संज्ञा से व्याप्त है। यदि चित्त में परिवर्तन होता है तो अंतर्गत सभी करणों में परिवर्तन होता है। इस परिवर्तन का कारण योगियों का संकल्प ही है। बिना संकल्प से न मुमुक्षुत्व आता है न आगे की परिवर्तन की प्रक्रिया। मुमुक्षुत्व के पहले तम या रजो गुणों के आधिक्य से चित्त की जो स्थिति थी वह स्थिति सत्वगुण (सम्यक शुद्धि) के बाद निश्चित ही बदलती है। और उस समय जो चित्त होता है वह पहले के चित्त से बिलकुल ही नया होता है। यह संकल्प से नये चित्त का निर्माण ही हुआ है।

चित्त शरीराश्रित ही होता है। शरीर के बिना चित्त का रहना संभव नही। शरीर यह चित्त का ही भौतिक प्रकटीकरण है। यहां प्रश्न ऐसा उत्पन्न होता है कि क्या किसी योगी पुरुष से योग शक्ति के द्वारा ऐसे निर्मित चित्तों का दर्शन औरों को भी होता है? यदि यह दर्शन औरों को होता है तो पातंजल योग सूत्र में लिखित "निर्माणचित्तान्यस्मितामात्रात" इस सूत्र की परिपुष्टि अवश्य होगी।

इस संदर्भ मे कुछ उदाहरण हम इसकी परिपुष्टि के लिए प्रस्तुत करना चाहते है।

उत्तरप्रदेश के वन विभाग में एग्रानामी के विभागाध्यक्ष पद पर डा. के. डी. कोरान्ने कार्यरत थे। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती रत्न कोरान्ने, का मायका वर्धा में है। श्रीमती कोरान्ने के भाई भास्कर देशपांडे वर्धा के है। ये बहुत दिनों से परम पूज्य गुरुजी के शिष्य है। पूज्य गुरुजी का वर्धा मे जब निवास होता था तब वे श्री भास्कर देशपांडे के घर अक्सर जाया करते थे। १९७७ में श्रीमती कोरान्ने की माताजी बीमार थी। उनसे मिलने वह वर्धा आयी हुई थी। अगला अनुभव

उन्ही के शब्दों मे– "इसी दौरान एक दिन पूज्य गुरुजी घर पर पधारे। अध्यात्मिक चर्चा चल रही थी, जिसमें अन्य व्यक्ति अपनी अपनी शकाओं का समाधान पूज्य गुरुजी से प्राप्त कर रहे थे। मुझे भी लग रहा था कि मैं भी कुछ पूछूं और पूछ ही बैठी कि मुझे "ॐ" के बारे मे बताइये। इस पर पूज्य गुरुजी ने जो बताया उसका सार यह था कि इसका अर्थ वाणी से नही समझाया जा सकता, यह तो अनुभव करके देखने और समझने का विषय है। पूज्य गुरुजी के चले जाने के बाद उस रात घर के सारे व्यक्ति निद्राधीन हो गए। नींद लगने के कुछ देर बाद मुझे बाहर के बराण्डे का दरवाजा खुलने की आवाज आयी। कुत्ता जोर से भौंकने लगा। अन्दर आये व्यक्ति के बराण्डे में पडे झूले में बैठने के बाद, मुझे बोध हुआ कि ये तो गुरुजी ही है जो आज शाम यहा आये थे। मुझ बहुत आश्चर्य हुआ कि ये इतनी रात यहां कैसे आयें। अभी मैं सोंच ही रही थी कि इनसे मिलू या न मिलू, कि वे पुनः वापस हो गए। मुझे बरांडे के दरवाजों के बद होने की आवाज आयी। सुबह उठकर मैंने इस घटना का वर्णन अपने भाई भास्कर से किया तो वह चौक गया। उसने जाकर पूज्य गुरुजी से इसकी सत्यता परखनी चाही। पूज्य गुरुजी ने सच को सच ही रहने दिया"

दूसरी घटना बिलासपुर के डा. अरविन्द शर्मा के साथ २६ अगस्त १९८५ को घटी। डा. शर्माजी की धर्मपत्नी श्रीमती मंजुला शर्मा बिलासपुर स्थित डा. भार्गव के प्रसुतिगृह में प्रसव हेतु भर्ती थीं। उनका स्वास्थ्य पूरी तरह से ठीक नहीं था। डा. शर्मा उनके स्वास्थ्य के बारे में कुछ ज्यादा ही चिंतित थे। पेईंग वार्ड के कमरे में एक कोने में रखे टेबल पर उन्होंने पूज्य गुरुजी की (वर्तमान अवस्था की) तसवीर रखकर उनके सामने एक अगरबत्ती जलाकर अपनी मनोगत व्यथा निवेदन की। कुछ समय बाद उन्होंने देखा कि एक सज्जन उस कमरे के बाहर चहल कदमी करते हुए खिडकी से बार बार भीतर की ओर देखते थे। डा. शर्मा ने यह देखा और उन्हे लगा वे सज्जन माचिस, वगैरह कुछ चाहते होंगे। रात के १० बजे के आसपास श्रीमती शर्मा को आपरेशन थियेटर ले जाया गया। बहुत दौड़धूप करने के बाद रात के ११ बजे प्रसव निर्विघ्न हो गया। इस सब गडबडी के बीच वह सज्जन बरांडे मे स्वस्थ चित्त से चहल कदमी कर रहे थे।

दूसरे दिन सुबह ८–९ बजे भी वे सज्जन उसी मुद्रा में डा. शर्मा के कमरे के सामने खडे थे। श्रीमती शर्मा का स्वास्थ ठीक होने से प्रसन्न डा. शर्माने उन सज्जन के साथ कुछ बातचीत की। उन्हे वहां आने का कारण पूछा और उनके बारे मे पूछताछ की। उन सज्जन ने बताया कि वे तिवारी है और बेमेतरा से आये हैं। डा. शर्मा दवाई लाने दवाई की दुकान गए और आने के बाद उन सज्जन को मिलने की बहुत कोशिश की लेकिन उनका कुछ पता नहीं चला।

कुछ दिनों बाद डा. शर्मा मुंगेली आये। आश्रम में उन्होंने पूज्य गुरुजी और माताजी की तस्वीर देखी जो बहुत पुरानी थी। और विस्मय से आश्रम में स्थित गुरु परिवार के सदस्यों को कहने लगे कि उन्हें डा. भार्गव के अस्पताल में जो सज्जन मिले थे उनकी छवि हूबहू इस

तस्वीर जैसी है। कुछ दिनों बाद प्रसंग वश उन्होंने पूज्य गुरुजीसे इसी बारे में चर्चा की। गुरुजी ने मुस्कुराकर उत्तर दिया कि हम नहीं जानते भाई, लोग एसा कहते हैं।

डा. (मिसेज) सईदा शिंदे जो भोपाल मेडिकल कॉलेज में फार्मोकालाजी की प्राध्यापिका है, लिखती है– "I have many experiences. Once I had a talk with Rev. Guruii during early morning which was neither a dream nor a sleep. He was far away from my place but I could hear his words very clearly. He told me to read a few Suras in Quoran Sharif. This was an extraordinary experience."

बिलासपुर के प्राध्यापक श्री. नीलकंठ देशपांडे के साथ भी ऐसी ही घटना घटी है। उनकी पत्नी यकृत की बीमारी से अत्यधिक पीडित थी। डाक्टरों के अनुसार हालत गंभीर थी। उन्होंने अपने भतीजे श्री भास्कर देशपांडे को जो वर्धा में थे– पत्र लिखा और उनसे अनुरोध किया कि यह बात गुरुजी से कहकर उनसे आशीर्वाद मागें। जब भास्कर देशपांडे पू. गुरुजी से मिले और श्री नीलकंठजी के पत्र में लिखी हुई बात कही तब गुरुजी ने कहा– मैं बिलासपूर बाळासाहब के घर जाकर आया हूं।" श्री नीलकठ जी को बाळा साहब भी कहते हैं। इसी बीच बिलासपुर में बाळा साहब के घर रात के समय किसी ने दरवाजा खटखटाया। बाळासाहब पत्नी की सुश्रूषा के कारण गत दो तीन दिनों से सो नही सके थे। उनकी भी आंखों में बहुत नींद थी: उन्होंने दो तीन बार दरवाजा खटखटाने की आवाज सुनी। किसी ने दरवाजा खोला और खटखटानेवाले सज्जन अन्दर आ गए। बाळा साहब ने समझा कि डाक्टर वगैरह आये होंगे। दुसरे दिन सुबह बाळा साहब की लडकियों ने उन्हें बताया कि गुरुजी बिलासपुर आये है। वे कल रात अपने घर आये थे और मां को देखकर गए है। आज उनके दर्शन को जायेंगे। बाळा साहब ने अपनी पत्नी से उस विषय में पूछा तो उन्होंने कहा कि रात में कोई आया था और मेरे पेट पर हाथ फेर कर चला गया। उसके तुरंत बाद ही श्रीमती देशपांडे के स्वास्थ्य में सुधार प्रारंभ हो गई और कुछ ही दिनों मे वह स्वस्थ हो गई। यह बात देखकर डाक्टर अचंभित रह गए।

ग्वालियर से श्रीमती नावलेकर, शिक्षिका, शासकीय माध्यमिक विद्यालय माधवगज लिखती है–

१९८५ की घटना है। मेरे दूर के रिश्ते के ससुर करीब १२–१३ साल पहले मर गए थे। अपनी अतृप्त वासनाओं के कारण उनकी आत्मा भटक रही थी और अनेक रिश्तेदारों कों उनके विचित्र विचित्र अनुभव भी आये।

मैं अपने घर में सोई हुई थी। मुझे ऐसा दिखा कि वे मृत ससुर आये और मुझे खटिया पर से उठाकर अपने छत्री बाजार में स्थित पुराने मकान में ले गए। मैं बहुत घबराई और रोने लगी। उन्होने मुझे वहां से उठाया और बहुत दूर के गांव में ले गए। मुझे वह स्थान अपरिचित लगा। पास में ही एक महिला दिखी। मैंने उसे गांव का नाम पूछा। उसने रींवा बताया। मै घबराई हुई तो थी, और जोर से रोने लगी। फिर उस भूत ने

मुझे वहां से भी उठाया और वह मुझे पूना ले गया पूना मेरा देखा हुआ था इसलिए मैं उस शहर को पहचान गई। पूना में जिस जगह वह प्रेतात्मा मुझे ले गया वह एक खंडहर था। घबराहट के मारे मेरा बदन पसीने पसीने हो गया। मेरी नींद टूट गई किंतु डर के कारण मैंने आखे नहीं खोली।

मुझे ऐसा स्पष्ट अनुभव हुआ कि श्री गुरुजी सीढियों पर से बडी तेजीसे ऊपर आए। उन्होंने दरवाजा खटखटाया। मैं इतनी डर गई थी कि दरवाजा खोलने को भी नही उठ सकी। कमरे की खिडकी खुली थी। उस खिडकी से गुरुजी अंदर आए और मेरे सिरहाने खडे हो गए। उनका सान्निध्य पाते ही मेरा भय निकल गया और मैंने आंखे खोली। गुरुजी वहां से चले गए थे।

पूज्य गुरुजी के दर्शन होने पर मैंने उनको यह घटना सुनायी तो वे बोले– "वह प्रेतात्मा तुम्हें ले जाना चाहता था।" पूज्य गुरुदेव की कृपा के कारण ही मैं उस भयानक रात को बच सकी ऐसा मेरा विश्वास है।

(इसी अंक मे 'लेसर किरणें एवं यौगिक दिव्य शक्ति-एक समन्वय" यह लेख प्रकाशित हुआ है। उसमे दिए गए प्रसंग भी इस संदर्भ में पढने योग्य है।)

ऊपर दिये गये उदाहरणों से यह स्पष्ट होगा कि परम पूज्य गुरुदेव को उनके बहुत से शिष्यों ने संकट के समय सशरीर देखा तथा उनके संकटों का निवारण भी हुआ। इन सब बातों से यह सिद्ध होता हैं कि योगी पुरुष अपने संकल्प से दूसरे चित्त का निर्माण कर सकता है। इस संदर्भ में विश्वामित्र जी का उदाहरण अनुचित न होगा। उन्होंने तो अपने संकल्प से प्रतिसृष्टि का ही निर्माण किया। जो योगी पुरुष निर्बीज समाधि मे जाकर उस स्थिति को प्राप्त कर लेते हैं, जिसे आत्मस्थिति कहते है, उन्हें एक या अनेक अतींद्रिय शक्तियों की प्राप्ति होती है। उन शक्तियों से वर्तमान अतीत और अनागत का प्रत्यक्ष ज्ञान होता है। यह प्रत्यक्ष ज्ञान ही सर्वज्ञता का बीज है। यह अतींद्रिय शक्ति से होनेवाला प्रत्यक्ष ज्ञान कम या अधिक हो सकता है। यह कम या अधिक होना– दूसरे किसी की अपेक्षा ही कम या अधिक कहा जाता है। इसे ही सातिशय कहते हैं। अतिशय शब्द से मर्यादा दर्शायी जाती है। योगी पुरुष को होनेवाला अतींद्रिय प्रत्यक्ष ज्ञान इस प्रकार से सातिशय होता है। यह सर्वज्ञता का बीजरुप ज्ञान बढते बढते मर्यादा रहित हो जाये, उस स्थिति को निरतिशय सर्वज्ञता कहते है। यह तो प्रत्यक्ष ब्रह्म की ही अवस्था है।

यो अकामो निष्काम आप्तकाम आत्मकामो
न तस्य प्राणा उत्क्रामंति ब्रह्मैव सन् ब्रह्माप्येति।

(जो कामनाओं से रहित है, जो कामनाओ से बाहर निकल गया है, जिसकी कामनाएं पूरी हो गई है अथवा जिसको केवल आत्मा की कामना है, उसके प्राण नहीं निकलते हैं, वह ब्रह्म ही हुआ ब्रह्म को पहुंचता है।–(बृहदारण्यकोपनिषद)

❋

With Best Compliments From

Phone— 25430

Sanjay Electricals & Photo Goods

G. E. Road, Phool Chowk
RAIPUR (M. P.)

; Dealer :
Konika, Super Plus, Kodak

बिना प्रिंटर्स

वर्धा

With Best Compliments From

M/s Prabhat Engineering Works

NAWAPARA-RAJIM
Distt. Raipur (MP)

Related firm–
A-One Poultry Firm

Prop. **Nandlal Sairani**

With Best Compliments From

Sanjay Parboil Industries
NAWAPARA-RAJIM
Distt. Raipur (M. P.)
Prop. **Raju Sunderani**

With Best Compliments From

Rajprakash Agrawal & Brothers
NAWAPARA-RAJIM
Distt. Raipur (M. P.)
: Dealers in :
Fertilizers, Seeds, & Cement

आत्मज्ञानी संत श्री तिवारी महाराज के ८४ वे जन्मदिवस पर
हमारी शुभकामनायें

सुदर्शन ट्रेडर्स वर्धा

प. पू. तिवारी महाराज के ८४ वे जन्मदिवस पर हमारी शुभ कामनाये

परम पूज्य गुरुदेव श्री तिवारी महाराज के चरणों में सादर प्रणाम !

अंजलि गृह उद्योग, वर्धा

अद्भुत प्रसंग

–बी. एस. भटजीवाले
भू.पू. जिला एवं सत्र न्यायाधीश, इन्दौर

शादी की शहनाई बज रही थी। मेहमानों से घर भरा हुआ था। कोई हँसी मजाक कर रहा था, तो कहीं गीत सुनाई दे रहे थे। कल बारात जाने वाली थी। सब अपनी मस्ती में मस्त थे। पूज्य गुरुजी को इस शोर से बचाने के लिए चि सौ. अलका (मेरी पुत्री) के यहां भिजवा दिया था। साथ में श्री काका सा. शिंदे, श्री खोत सा. श्री ज्ञानसिंग तोमर, श्री ऊधोपुरी गोस्वामी एव श्री अशोक भाई थे। इन्दौर का गुरु परिवार भी पू गुरुजी के सत्संग का लाभ उठा रहा था। बहुत ही हर्षोल्लास का वातावरण बना हुआ था। २२ फरवरी १९८७ की यह यादगार शाम थी। कल सुबह मेरा पुत्र चि. राजीव और सौ. का. अर्चना शादी के बधन मे बंधने जा रहे थे।

परन्तु पू गुरुजी ने अलका के यहां जाने के पूर्व मुझे और सौ. बाई (पत्नी) को साथ बैठाया और मंत्रोच्चारण करके एक शाल हमको ओढाई। वास्तव में यह जीवन के लिए 'रक्षा कवच' था। आशीष दीं। शायद आने वाली विपत्ति का पूर्वाभास पू. गुरुजी को हो चुका था कि कहीं यमराज प्राण पखेरु उडाकर न ले जावे। १५ दिन पूर्व ही पू गुरुजी को वर्धा से लेकर आया था। मेरी अटूट श्रद्धा और विश्वास पू. गुरुजी पर सदैव से ही रहा है। उनके द्वारा बताऐ मार्ग पर चलकर मुझे बहुत कुछ योगानुभूतियां प्राप्त हुई। जीवन की धारा बदल गई। अध्यात्म की सही दिशा मिल गई जो जन्म जन्मान्तर के बन्धनों से छुटकारा पाने के लिए जरुरी है। पिछले २० वर्षों से मैं गायत्री की उपासना कर रहा था। पांच वर्ष पूर्व ही गुरुजी के श्री चरणों में जगह मिली। जिसके कारण जीवन परिवर्तन के साथ रोजाना प्रातः तीन घण्टे तेज प्रकाश पुंज मे रहने का अवसर मिला। पू. गुरुजी का अत्यन्त ऋणी एवं आभारी हूं। यह सोचते सोचते ही नींद लग गई।

अचानक रात को तीन बजे सीने में दर्द शुरु हुआ और मैं पलंग पर लोटने लगा। परन्तु दर्द और बेचैनी बढती गई। मैं जमीन पर लेट गया और लोटने लगा। दर्द में थोडा आराम मिला और नींद लग गई।

प्रातः जल्दी उठकर दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर शादी की तैयारी में लग गये। इतने में मेहमान (लडकी वाले) आ गये। मैंने अपने पुत्र चि. संजीव को दर्द के बारे में बता दिया था। उसने डा. एस. आर. जैन सा. को फोन कर दिया। उन्होंने बिल्कुल आराम करने को कहा था। कार्यक्रम चल रहा था और सीने में दर्द दबाऐ बैठा था। डाक्टर जैन सा आ गए। वे मुझे मेहमानों के बीच बैठा हुआ देखकर बहुत नाराज हुए। मुझे आश्चर्य हुआ और बुरा भी लगा। भला मुझे ऐसी को

बडी बीमारी है ! खैर उन्होंने जांच की और तुरंत अस्पताल में भर्ती होने को कहा । इंजेक्शन, दवाइयां दी और थोडी देर पश्चात ही मैं बेहोश हो गया। मुझे 'हार्ट अटैक' आ चुका था। एम्बुलेन्स बुलाई गई ।

बैन्ड बाजे बज रहे थे। बारात रवाना हो रही थी और इधर बाई का दिल बैठा जा रहा था। पू. गुरुजी का चरणामृत भी नहीं आया था । इतने में श्री शरद मन्दसौर वाले, चरणामृत लेकर आये और चरणामृत दिया। एम्बुलैन्स आ गई । उसमें बाई, बडा पुत्र चि. राघव और मुझे चोईथराम अस्पताल में ले जाया गया ।

जब पू. गुरुजी को सब बताया तो पू. गुरुजी चिन्तित हुए और कहा सब ठीक हो जाऐगा । वर-वधू को आशीर्वाद देकर पू. गुरुजी शादी के मण्डप में विवाह कार्य सम्पन्न होते तक ठहरे तथा सीधे कार से अस्पताल पहुँचे । इलाज चल रहा था। गहन चिकित्सा इकाई में रखा था। परन्तु हालत बिगडती जा रही थी और चिन्ता बढती जा रही थी ।

पू. गुरुजी यमराज को वापस लौटाना चाहते थे और यह अडिग था। यह शक्ति परीक्षण का समय बहुत नाजुक और विचलित कर रहा था। सभी शिष्यों को बुलाकर पू. गुरुजी ने अपना-अपना पुण्य दान करने को कहा । दूसरे दिन पू गुरुजी अस्पताल गए । कमरे से सबको बाहर निकाला और दरवाजा बन्द कर लिया। क्या किया यह तो पू. गुरुजी ही जानें । परन्तु यमराज को खाली हाथ लौटाने का बन्दोबस्त जरुर कर दिया था ।

अचानक शाम को तबीयत बिगडती गई । डाक्टरों ने अपनी पूरी कोशिश करने के पश्चात सारे प्रयास विफल होते देखकर लाचारी जाहिर कर दी और कहा कि हमसे जो बना वह हम कर चुके है । आप हमें फोन न करना, न बुलाना, न लेने आना । कुछ समय के मेहमान हैं । हमारे पास अब कोई इलाज नही है । अगर कोई महा शक्ति या सत्पुरुष की कृपा हो, तो ही बच सकते हैं । हमारी शक्ति के बाहर है। जीवन मृत्यु के संघर्ष मे हालत बहुत चिन्ता जनक हो गई थी। पू. गुरुजी को डाक्टरों की लाचारी और निराशा बताई गई। तब पू. गुरुजी ने दृढतापूर्वक कहा– डाक्टरों से कहिये, वे निराश न हों। इलाज जारी रखें । वह निश्चित ठीक होंगे । पू. गुरुजी अलका के यहां से वापस घर लौट आऐ थे। एकांत मे अपने आप मौन थे, लेकिन उनके चेहरे पर दृढ आत्म विश्वास झलक रहा था। वहीं से अपनी शक्ति का प्रयोग करते रहे। मुझे सदैव यह लग रहा था। कि पूज्य गुरुजी मेरे सान्निध्य में ही है।

इधर डाक्टरों की घबराहट देखकर बाई ने आँखे बंद करके गुरुजी का स्मरण किया और एक मिनट के पश्चात ही गुरुजी के दर्शन हुए। बाई ने कहा– "गुरुजी आप मुझे शक्ति दें। क्या जाते हुए प्राण वापस लौटकर आते है ? मैं तो अज्ञानी हूं, मुझे कुछ मालूम नहीं है। क्या ऐसा चमत्कार होता है ? ऐसा कहकर आँखें खोल दी और पू. गुरुजी का मानस जप करते हुए पूरे शरीर पर हाथ फेरा। बाई को ऐसा प्रतीत हुआ कि पू. गुरुजी पास ही खडे थे ।

रात को परिवर्तन का दौर शुरू हुआ। श्वसन क्रिया में थोडा सुधार आया और बेचेनी कम होने लगी। धीरे धीरे सब कुछ नार्मल होता जा रहा था। डाक्टर भी खडे आश्चर्य से सब देख रहे थे। उनके विज्ञान की सीमा के बाहर सब कुछ हो रहा था। कुछ समझ में उनके नहीं आ रहा था सब कुछ एक अनहोनी थी। थोडी देर के बाद पुनः जांच करके डाक्टरों ने संतोष जाहिर किया– अब सब ठीक है। घबराने की कोई बात नहीं हैं। अब खतरे से बाहर है।

सुबह तक दर्द मे काफी राहत हो चुकी थी। शुरु से ही बाई ने सब दवाइयों को चरणामृत के साथ दिया था। बाई का विश्वास डाक्टरों मे नहीं केवल पू. गुरुजी मे ही था।

दिन बीतते गए। तेजी से स्वास्थ्य में सुधार होता गया। प्रायवेट वार्ड मे अब रख दिया था। स्वास्थ्य में सुधार देखकर पू. गुरुजी मुंगेली आश्रम चले गये। एक महीने में पूर्ण स्वस्थ होकर घर पर लौटा। थोडा घूमना फिरना भी शुरु हो गया था।

मुझे बार बार पूज्य गुरुजी का विचार आता और परिवार के सभी लोग भी कह रहे थे कि पू. गुरुजी की कृपा एवं आशीर्वाद तथा गुरु परिवार के पुण्य से प्राण बचे है। शा की बात मस्तिष्क पटल पर उभरती। अग पू. गुरुजी नहीं होते. तो आज मैं इस दुनिय से उठ गया होता और अंधेरे में भटकते हु जीवन का अन्त हो जाता। अध्याय अधूरा र जाता और यह अमूल्य जीवन व्यर्थ ही चल जाता। जीवनदान के पश्चात् यह हार्दिक इच्छ रहती है कि "गुरुजी, मेरा मन निरन्तर आपके मंगलमय गुणों का ही स्मरण करता रहे। मेरी वाणी आपके गुणों का ही गान करे और शरी आपकी सेवा में लगा रहे। जीवन के प्रति मेर मोह दूर हो गया, कृपया आप मुझे अपने चरणों का आश्रय दें"।

कुछ समय पश्चात पू. गुरुजी स्वास्थ्य देखने वापस इन्दौर आए। बाई ने चरणों में प्रणाम किया और आंसुओं की धारा गुरुजी के चरणों पर बहने लगी। सिसकते हुए भाव-विभोर होकर बाई ने कहा– गुरुजी आपने मेरा सुहाग लौटाया, कुछ कह नहीं सकती। तब पू. गुरुजी ने कहा– यह रोना बन्द करो। अब मुझसे सहन नहीं होता। ताई यह मेरी परीक्षा थी, मैंने कुछ नहीं किया। कहते हुए गुरुजी का गला भर आया और आंखो से आंसू बह निकले।

सत-संग

डॉ. श्रीमति कुलवंत कौर पंधेर
प्राध्यापक
मेडीकल कालीज, ग्वालियर

मैं हूँ जिन्दा कि मुझे,
तुमने किया है धारण ।
मैं देखती हूँ क्यों कि,
तुम हो छुपे आंखों में ।

मैं क्या हूँ ? कहो
तुम नहीं अगर मुझमें
तुम्हारे बिन मैं कैसे देखूं
कैसे जानूं मैं ।

आंखों की ज्योति भी तो
तेरी जोत से ही है ।
मुझमें फिर शक्ति कहां
शक्ति तो तुम्हारी है ।

तेरे अस्तित्व से ही है,
मेरा अस्तित्व अगर ।
तब तो फिर मैं कहां
बस एक तूही तूही है ।

धन्य है वो मेरा
प्यारा सतगुरु ।
जिसने इस 'मैं' को
यूं मिटाया है ।

चरणों की शरण में
जिसकी हमने ।
बैठ सत-संग
का सुख पाया है ।

परम पूज्य गुरुजी के श्री चरणो में
कोटिश: नमन

पवन ट्रेडिंग कंपनी
वर्धा

परम पूज्य गुरुजी के ८४ वे जन्म दिवस
के उपलक्षमें हार्दिक बधाईयाँ

झामरे ब्रदर्स

वर्धा

ज्ञान विज्ञान तृप्तात्मा
कूटस्थो विजितेन्द्रियः
युक्त इत्युच्यते योगी
समलोष्टाश्म कांचनः ।।

प. पू. गुरुदेव श्री वासुदेवजी तिवारी महाराज

श्री चरणोंम शत् शत् प्रणाम

कामधेनु आहार उद्योग

[MIDC] वर्धा [महा.]

सर्वोत्कृष्ट पशु आहार के निर्माता

संत चरित्र

संत शिरोमणि श्री तुकाराम महाराज

भारत में श्रीकृष्ण भक्ति के अनेक सम्प्रदायों का उदय हुआ। बंगाल में चैतन्य महाप्रभु ईसवीं सन् १४८५ से ईसवी सन् १५३३ के कालकंड मे हुए। चैतन्य महाप्रभु के समाधिस्थ होने के करीब ७५ वर्ष बाद संत शिरोमणि श्री तुकाराम महाराज का जन्म महाराष्ट्र के देहू नाम के स्थान में हुआ। तुकाराम महाराज और समर्थ रामदास स्वामी दोनों का जन्म-वर्ष एक ही है, सन १६०८ ईसवी। महाराष्ट्र में जो श्रीकृष्ण उपासक हुए, वे भगवान श्रीकृष्ण को विट्ठल या विठोबा के रूप में पूजते हैं। पढरपुर यह भगवान विठ्ठल का स्थान है। महाराष्ट्र के कृष्णोपासकों के इस सम्प्रदाय को भागवत संप्रदाय कहते हैं। सत श्रेष्ठ पुंडलीक को भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन होने पर उन्होने पास में पडी हुई ईंट (मराठी में वीट Brick) बाजू में फेंककर भगवान से कहा कि मेरा मातृ पितृ भक्ति का काम होते तक यहीं खडे रहिये। भक्त का कहना तो भगवान टाल नही सकते थे। वे ईट पर ही खडे रह गये और तब से वे वहीं खडे हैं। ईट के ऊपर स्थायी हो जाने से उन्हे विठ्ठल कहते हैं, विटे वरीं ठेला तो विठ्ठल। "भगवान श्री विठ्ठल को विठोबा या पांडुरंग भी कहते हैं। मां रूक्मिणी को रखुमाई नाम से जानते हैं। पंढरपुर में रखुमाई श्री विठ्ठल के साथ खडीं नहीं हैं। उनका मंदिर श्री विठ्ठल मंदिर के पीछे है।

महाराष्ट्र के इस भागवत सम्प्रदाय का प्रचलित नाम वारकरी संप्रदाय है। तथा भगवान पांडुरंग के भक्त आषाढी कार्तिकी एकादशियों कों श्री क्षेत्र पंढरपुर अवश्य जाते हैं। उसे वारी कहते हैं। वारी करनेवाले बारकरी हुए। यह वारकरी सम्प्रदाय श्री ज्ञानेश्वर महाराज के भी पहले का है। किंतु सम्प्रदाय में- ऐसीं मान्यता है – कि इसकी शुरूवात श्री ज्ञानेश्वर महाराज ने की और संत तुकाराम महाराज यह उसका परमोत्कर्ष हैं। मराठी में कहते हैं, ज्ञानदेवे रचिला पाया। तुका झालासे कळस ॥ इसका अर्थ यह है कि ज्ञानदेव महाराज ने इसकी नींव डाली और तुकाराम महाराज इसके कलश पर अर्थात सर्वोच्च स्थान पर पहुंचे हैं। ऐसे संत श्रेष्ठ का परिचय कराना इस लेख का उद्देश्य है।

संत श्रेष्ठ तुकाराम महाराज का जन्स्थान देहू यह ग्राम आलंदी से (ज्ञानेश्वर महाराज का समाधिस्थल) पांच कोस पर इंद्रायणी नामक नदी के किनारे पर बसा हुआ है। लोग ऐसा समझते है कि तुकाराम महाराज वाणी (वणिक) थे। किंतु तुकाराम महाराज जाति से वणिक नही थे। उनका जन्म कुनबी जाति मे हुआ था। उनका कुल सुखी तथा प्रतिष्ठित था। उनके घराने मैं देहू गांव की महाजनी का वतन (Government Grant) था। उस काल में

जिस गांव मे बाजार होता था उस गांव मे दो प्रमुख अधिकारी महाजन और शेटे – इन ओहदों के होते थे ।

तुकाराम महाराज के पूर्वज विश्वंभर बाबा विठ्ठल भक्त थे । उन्होंने देहू ग्राम में विठ्ठल मंदिर बनवाया था । तुकाराम महाराज के पिता का नाम बोल्होबा तथा माता का नाम कनकाबाई था । ये दोनों विठ्ठल भक्त थे तथा प्रत्येक आषाढी कार्तिकी एकादशी को पंढरपुर की वारी नियमित रूप से करते थे ।

तुकाराम महाराज की आयु के पहले १३ साल, माता पिता की छत्रछाया में बिना किसी कष्ट के गुजरे । तुकाराम महाराज के और दो भाई थे । बडे का नाम सावजी तथा छोटे का कान्होबा था । तुकाराम की पहली शादी आयु के १४ वे साल में हुई । उनकी प्रथम पत्नी का नाम रखुमाई था । उसे दमा की शिकायत थी । इसलिए तुकाराम के माता-पिता ने उनकी दूसरी शादी पूना के एक साहूकार की लडकी से कर दी । इसका नाम था जीजाबाई । तुकाराम महाराज के बडे भाई सावजी भगवद्भक्त थे । उनके पिता बोल्होबा की इच्छा थी कि सावजी घर का कामकाज सम्हालें । किंतु सावजी ने इस बात को अमान्य कर दिया । तुकाराम महाराज की आयु के १७ वे साल मे ही उनके पिताजी का देहान्त हुआ । बडे भाई सावजी की पत्नी भी गुजर गई और एक साल बाद ही सावजी तीर्थ-यात्रा पर निकल गए । तुकाराम महाराज पर तो आसमान ही फट गया । उनकी वृत्ति उदासीन हो गई और सांसारिक बातों पर मन ही नहीं लगने लगा । इस परिस्थिति का नाजायज फायदा लोगोंने लिया और घर गृहस्थी तहस नहस हो गई । तुकारामजी की दो पत्नियां, एक लडका, छोटाभाई आदि के परिवार का पोषण करना जरूरी था । इसलिए उन्होंने गांव में ही एक दुकान लगाई । इस छोटी सी उम्र में ही तुकाराम की वृत्ति भगवान विठ्ठल में लग गई । भगवान विठ्ठल का अखण्ड नाम स्मरण, सत्य वचन का संकल्प, माल तोलते समय ढील और पैसा मांगते समय बेफिक्री, इन स्वभाव विशेषताओं के कारण दुकान तो डूबनी ही थी । ऐसी हालत में, प्रपंच चलाने के लिए लोगों से कर्ज लेने के सिवाय दूसरा चारा भी नहीं था । कर्ज बढता गया । घर की सब चीजें बेची गई और दीवालिया होने का समय आया । सगे संबंधियों ने कुछ मदद दी किंतु उससे भी कुछ नहीं जम सका । पहिली पत्नी तो सीधी थी । किंतु दूसरी जीजाबाई उग्र स्वभाव की थी । गृहस्थी की यह स्थिति देखकर वह तुकाराम को बहुत खरी खोटी सुनाती तथा सदा सर्वदा, अपना संताप बेहिचक व्यक्त करती रहती थी। इन सब बातों से तुकाराम महाराज अत्यंत व्यथित हो गए । घर में जो जानवर थे वे भी मर गए और अंततः तुकाराम का दिवाला पिट गया । गांव वालों ने तुकाराम महाराज को बहुत सताया । "तू विठोबा का नाम हरदम लेता है. उसी का यह फल है," ऐसा कहकर वे तुकोबा की भक्ति की भी निंदा करने लगे । ऐसी स्थिती में एक बार पैसे जुटाकर तुकाराम महाराज ने मिर्ची की खरीदी की और उसे बेचने के लिए वे कोंकण में गए । वहां उनके सीधेपन का फायदा समाज-कंटकों ने उठाया और यह व्यापार भी घाटे का रहा । थोडा बहुत पैसा हाथ में आया तो रास्ते में एक ठग ने उन्हें ठग लिया । तुकोबा की पत्नी जीजाबाई ने कहीं से लाकर दो सौ रुपया

उन्हें दिया। तुकाराम महाराज ने उसका नमक खरीदा और दूर दूर के गांव में जाकर वह ढाई सौ रुपये में बेचा। लौटते समय रास्ते में एक दरिद्र ब्राह्मण से मुलाकात हुई और उसने बडी दीनता से द्रव्य की याचना की। तुकाराम महाराज का अंतःकरण द्रवित हो उठा और अपने पास का सब द्रव्य उन्होंने उसे दे डाला। घर लौटने पर जीजाबाई अत्यंत क्रोधित हो गई और उनको बहुत भला बुरा सुनाया।

इसी समय पुना प्रांत में भयानक अकाल पडा। लोगों को खाने के लिए अनाज नहीं, पीने को पानी नहीं, ऐसी हालत हुई। इस भयानक अकाल का उल्लेख पूना गजेटियर भाग तीन पृष्ठ ४०३ पर है। एल्फिस्टन के लिखे गए इतिहास मे भी इस अकाल का वर्णन आया है। इस अकाल ने बहुत बडे क्षेत्र पर प्रभाव डाला था ऐसा दिखता है। करीब करीब पूरा महाराष्ट्र तथा गुजरात भी इसकी चपेट में आये थे। तुकाराम महाराज का समकालीन इतिहासकार अब्दुल हमीर लाहोरी अपने ग्रंथ बादशाहनामा में लिखता है, "गत वर्ष (ई. सन १६२९-१६३०) में बालाघाट और दौलताबाद के तरफ बिलकुल बारिस नही हुई। पास पडोस के इलाकों मे अनाज की उपज बिलकुल नहीं हुई। लोगों की हालत बहुत खराब हो गई। एक रोटी के टुकडे के लिए लोगों ने अपने जानवर और बच्चे भी बेच डाले। मृतकों की हड्डियों को कूटकर लोगों ने आटे में मिलाया। यह अकाल इतनी चरम सीमा पर पहुंच गया कि आदमी, आदमी को खाने लगा, यहां तक कि पुत्र प्रेम भूलकर लोग अपने ही बच्चों को खाने लगे। जिधर उधर मुर्दों के ढेर पडे हुए थे।

इसी अकाल का उल्लेख भारत के प्रसिद्ध इतिहासज्ञ स्व. राजवाडेजी ने "मराठों के इतिहास" के साधन खंड १५ में "शिवकालीन पत्र व्यवहार' में किया है।

तुकाराम महाराज की पहली पत्नी को खाने को कुछ न मिलने के कारण भूख से मर गई। उसके तुरंत बाद ही उसका पहला पुत्र भी गुजर गया। और तुकाराम महाराज का परिवार भी पूरी तरह से तहस नहस हो गया। इस परिस्थिति का परिणाम इस महापुरुष की विरक्ति बढाने में ही हुआ। मैं विठ्ठल की भक्ति करता हूं, लेकिन उसने मुझे इस आपत्ति में बिलकुल सहारा नहीं दिया। अब उसकी भक्ति करने में क्या अर्थ है। ऐसा विचार तुकाराम के मन में कभी भी नहीं आया। उनकी भगवद्भक्ति और तीव्र हो गई। वे अपने अभंगों में लिखते हैं--

१

बाप मेला न कळतां। नव्हती संसाराची चिंता ॥
विठो तुझे माझें राज्य। नाही दुसऱ्याचे काज ॥
बाइल मेली मुक्त झाली। देवें माया सोडविली ॥
पोर मेले बरें झाले। देवें मायेविरहित केले ॥
माता मेली मज देखतां। तुका म्हणे हरली चिंता ॥

२

बरे झाले देवा निघाले दिवाळे ।
बरी या दुष्काळे पीडा केली ।।

अनुतापें तुझें राहिलें चिंतन ।
जाला हा वमन संसार ।।धृ।।

बरे जाले देवा बाइल कर्कशा ।
बरी हे दुर्दशा जनामध्यें ।।

बरे जाले जगीं पावलो अपमान ।
बरे गेलें धन ढोरें गुरें ।।

बरें झालें नाही धरिली लोक लाज ।
बरा आलो तुज शरण देवा ।।

अर्थात ना समझ उम्र थी उस समय पिताजी गुजर गए किंतु गृहस्थी की चिंता नहीं थीं। हे विठ्ठल भगवान तुम्हारा और मेरा ही राज्य था। दूसरे किसी का काम ही नहीं था। पत्नी गुजर गई, माया से छुटकारा मिल गया, लडका गुजर गया रही सही माया भी खतम हो गई। देखते देखते मां भी चली गई, तुका कहता है सब चिंता ही नष्ट हो गई। अच्छा हो गया भगवान दीवाला निकल गया। अच्छा हुआ अकाल मे पीडा सहन करनी पडी। अनुताप के दौरान तेरा ही चिंतन रहा और ये संसार कै के समान हो गया। अच्छा हुआ कि पत्नी कर्कषा मिल गई और लोगों मे मेरी दूर्दशा हुई। दुनिया में अपमान हुआ, घर का धन मवेशी सब गयें। मैंने इस किसी भी बात की लज्जा न रखते हुए तेरे चरण नहीं छोडे। उल्टा इन सब विपदाओं में तेरे चरणों की लगन और तीव्र कर दी। यह अच्छा ही हुआ। श्री संत तुकाराम महाराज आगे और कहते है–

सर्व संगी वीट आला। तू एकला आवडसी ।।१।।
दिली आतां पायी मिठी। जगजेठी न सोडी ।।धृ।।

अर्थात इस सारे संसार के संग में अब अरुचि पैदा हो गई है। हे भगवान तू अकेला ही मुझे प्रिय है। तेरे चरणों को मैंने पकड लिया है, अब उसे कभी भी छूटने न दें।

गृहस्थी में आने वाली दुःखों की श्रृंखला से तुकाराम महाराज का वैराग्य चरम सीमा पर पहुंच गया। उन्होंने एकांत में रहना शुरू किया। वे भामनाथ के पहाड पर गये और वहां पंद्रह दिन एकांत में साधनारत रहे। वे लिखते हैं:

"पंधरा दिवसामाजी साक्षात्कार जाला।
विठोबा भेटला निराकार ।।"

तुकाराम महाराज घर से निकल गए और भामनाथ पर जाकर बैठें। जीजाबाई कितनी भी कर्कषा हो वह महान पतिव्रता थी। उन्हें ढूंढने के लिए उन्होंने प्रयास किया और आग्रह करके घर लायी।

तुकाराम महाराज के पिताजी के समय से लोगों से कुछ ऋण वसूल करना था। उसके कागजात उनके घर मे थे। वे उन्होंने लिए और इंद्रायणी नदी में डूबाने के लिए गए। उस समय उनके छोटे भाई कान्होबा ने उनसे कहा– "आप अब साधू हो गए किंतु मुझे तो पत्नी पुत्र आदि सबका परिवार चलाना है। देनदारों के इतने दस्तावेज डुबोकर मेरा कार्य कैसे चलेगा।" यह बात सुनकर तुकाराम महाराज ने कहा– ठीक है इसमें से आधे दस्तावेज ले लो और अपना प्रपंच अलग से चलाओ। हमारा सब बोझ अब भगवान श्री विठ्ठल

पर है। हमारे अन्न जल की व्यवस्था अब वही करेगा। हमारी चिंता मत करो। ऐसा कहकर उन्होंने देनदारों के दस्तावेजों का आधा आधा बटवारा किया। और अपने हिस्से के आधे दस्तावेज लेकर उन्हें इंद्रायणी नदी मे डुबो दिया।

उनका नित्यक्रम बडा शुद्ध और पवित्र था। प्रातःकाल देहशुद्धि निपटाकर श्री विठ्ठल मंदिर में जाना, भगवान की पूजा करना और पडोस के किसी भी पहाड पर जाकर वहां एकांत में ज्ञानेश्वरी या नाथ भागवत के ग्रंथों का पारायण करना। रात को गांव में लौटकर विठ्ठल मंदिर में कीर्तन करना या कीर्तन श्रवण करना और आधी रात के बाद थोडी सी निद्रा लेना। इस प्रकार विरक्त वृत्ति से रहते हुए क्षुधा, तृष्णा, निद्रा, आलस्य आदि शरीर धर्मों पर विजय पा लीया। और इंद्रिय जयी बन गये। आषाढी और कार्तिकी एकादशियों को श्री क्षेत्र पंढरपुर जाने का परिवार का नियम उन्होंने अंत तक चलाया। ज्ञानेश्वर महाराज का समाधिस्थल आळंदी नजदीक ही है। तुकाराम महाराज वहां बार बार जाते थे।

सामान्य लोगों की ऐसी धारणा है कि तुकाराम महाराज अशिक्षित और अनपढ थे। किंतु यह सत्य नही है। भगवद्गीता उनके नित्य पाठ मे थी। एकनाथ महाराज रचित नाथभागवत का उनका अच्छा अभ्यास था। अठारह पुराणों का भी उन्होंने अध्ययन किया था। उनके नित्य पठन में विष्णु सहस्रनाम भी था। शिवमहिम्न, भर्तृहरि के नीति वैराग्यशतक, श्रीमद् शंकराचार्यजी का पांडुरंगाष्टक, षटपदी आदि स्तोत्र भी उनके पठन में थे ऐसा विद्वानों का मत है। श्री तुकाराम महाराज का शास्त्रोक्त पद्धति से संस्कृत अध्ययन नहीं हुआ था किंतु साधनानुभूतियों के आधार पर उन्हें संस्कृत मे लिखे ग्रंथों का अर्थ समझ में आता था। उन्होंने ज्ञानेश्वरी तथा एकनाथ भागवत के मूल ग्रंथों को प्राप्त कर उनका अध्ययन किया था। श्री नामदेव महाराज तुकारामजी के बहुत पहले हो गए थे। नामदेव महाराज ने बहुत से अभंगों की रचना की थी। नामदेव महाराज के अभंग तथा संत श्रेष्ठ कबीर के दोहो का तुकाराम महाराज ने अध्ययन किया था। श्री तुकाराम महाराज को जो गुरुपदेश हुआ वह कथा भी विचित्र है। तुकाराम महाराज के गुरु श्री बाबाजी चैतन्य बहुत साल पहले समाधिस्थ हो गये थे। उन्होंने स्वप्न में आकर तुकाराम महाराज को दीक्षा दी। तुकाराम महाराज को स्वप्न में ऐसा दिखा कि एक सत्पुरुष गंगा स्नान करने जा रहा है। उसने गंगा स्नान को जाते हुए तुकाराम महाराज के सर पर हाथ रखा और भोजन के लिए एक पाव घी मांगा "राघव चैतन्य केशव चैतन्य" ऐसा परिचय दिया। अपना नाम बाबाजी ऐसा बतलाया और "रामकृष्ण हरि" यह मंत्र दिया। यह स्वप्न दीक्षा तुकाराम महाराज को गुरुवार माघ सुदी दशमी को हुई।

विद्वानो के मतानुसार केशव चैतन्य, बाबाजी चैतन्य ये दोनों एक ही व्यक्ति के नाम है।

गुरु दीक्षा होने के बाद ही तुकाराम महाराज को कवित्व स्फूर्ति हुई। वे अपने अभंगों मे कहते है।

नामदेव केलें स्वप्नामाजी जागें।
सवें पांडुरंगे येवोनीया ॥१॥

सांगितलें काम करावें कवित्व ।
वाउगें निमित्त बोलों नयें ॥२॥

माप टाकी सळे धरली विठ्ठलें ।
थापटोनी केलें सावधान ॥धृ॥

प्रमाणाची संख्या सांगे शतकोटी
उरलेले शेवटी लावी तुका ॥३॥

अर्थात भगवान पांडुरंग के साथ नामदेव महाराज स्वप्न में आयें। उन्होंने मुझे जगाया और कहा कि कवित्व करो । अपनी वाणी का दुरुपयोग न करो। तुम कविता करना शुरु करो, तुम्हारा सब अभिमान भगवान ने ले लिया है। मैंने शत कोटि अभंगों का संकल्प किया था। वे सब मेरे जीवन काल में पूर्ण नहीं हो सके। उनमें से जो संख्या बाकी बची है वह तुम पूरी करो। और इसके बाद तुकाराम महाराज ने अभंग रचना शुरू किया। तुकाराम महाराज भगवान पांडुरंग से प्रार्थना करते हैं, "भगवन् ! आप आश्रय देंगे, कृपा करेंगे तो मैं ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ और कबीर इनकी संगत मे निरंतर रहूंगा। उनके अनुभवों को अपने अभ्यास से जानने की कोशिश करुंगा। इन संतों की मालिका में आखिरी का स्थान भी मुझ मिले तो पर्याप्त है। अभी मैं वृत्ति में मलिनता का अनुभव करता हूं। आपके और इन संतों के आधार से मेरी मति शुद्ध होकर, मै स्वस्वरूप में समरस होकर परमानंद की प्राप्ति करूंगा।

तुकाराम महाराज का अहम् भाव बिलकुल ही नष्ट हो चुका था। लोगों ने उसका नाजायज फायदा भी उठाया। किसी ने अपने खेत की रखवाली करने को कहा तो वह निःशुल्क कर देते थे। किसी का बोझा ढो देते तो किसी का दूसरा कुछ काम कर देते थे। जिसने जो काम कहा वह कर देते थे। मैं इस गांव का महाजन हूं, मेरी भी कुछ इज्जत है. लोग स्वार्थ से और बदमाशी से मुझसे यह काम ले रहे है, यह भावना भी उनके मन को स्पर्श नही करती थी। नर सेवा और नारायण सेवा मे उनके लिए अब कोई अंतर नहीं था। वह कहते हैं--

भूतीं देव म्हणोनि भेटतो या जना ।
नाही हे भावना नर नारी ॥१॥

जाणें भाव पांडुरंग अतरींचा ।
नलगे द्यावा साचा परिवार ॥२॥

अर्थात सब भूतों में वह परमात्मा ही वास कर रहा है। इसलिए मैं उन सबसे मिलता हूं और उनका काम करता हूं। इन सब नर नारियों की भिन्नता तो मुझे दिखती ही नहीं। मेरा अंतरंग भाव वह पांडुरंग ही जानता है।

कोई प्रवासी रास्ते मे अकस्मात मिल जाये तो उसका बोझ अपने सर पर लेकर उसे कुछ समय विश्राम देना, वर्षा से यदि उसके कपडे गीले हो गये हो तो उसे सूखे वस्त्र देना, चलकर पांव दर्द करते हों तो स्वयं गरम पानी करके उसे सेंकना, किसी ने अपने घर के गाय बैल निर्बल और निरुपयोगी समझकर हकाल दिया हो तो उनके चारे पानी की व्यवस्था करना, चींटियों के वाल्मीकि पर जाकर वहां शक्कर डालना, तन से और मन से कभी भी हिंसा न करना, कीर्तन सुनते समय यदि गर्मी हो तो श्रोताओं को पंखा झेलना, कोई नदी से पानी लाते लाते थक गया हो तो उसके पानी के बर्तनको स्वयं

उसके घर पहुंचा देना इस विषय में तो तुकाराम महाराज श्रीमद्भागवत् में वर्णित जडभरत के कलियुगी अवतार ही थे। उनको सताने वाला तथा लोगो में उनकी अपकीर्ति करने वाला एक मंबाजी नाम का ब्राम्हण था। उसके बीमार पडने पर तुकाराम महाराज ने उसके भी हाथ पांव दबाये। परोपकार की इस भावना से उनका दिल इतना भर गया था कि घर में कुछ न होते हुए भी अपनी पत्नी की साडी उन्होंने एक अनाथ महिला को दे दी। एक बार एक बूढी औरत ने दूकान से तेल लाने को तुकाराम से कहा। उन्होने वह ला दिया। वह तेल जल्दी समाप्त ही नही हुआ। यह बात गांव मे सब को मालूम हो गई। तो बहुत से लोगों ने अपने अपने घर का तेल लाने का जिम्मा तुकाराम को सौंप दिया। एक बार एक किसान ने तुकाराम को अपने खेत में गन्ने का रस पीने को बुलाया। जीजाबाई ने यह निमंत्रण सुना तो उसने तुकाराम से कहा कि किसान जो गन्ने देगा वह बच्चों के लिए घर ले आना। उस किसान ने तुकाराम को रस पिलाया और बहुत से गन्ने घर के लिए भी उन्हें दिये। घर लौटते समय गांव के बच्चे तुकाराम के पास आये और गन्ना मांगने लगे तो तुकाराम ने वे गन्ने गांव के बच्चो में बांट दिए। केवल तीन गन्ने बच पाये। घर आने पर जीजाबाई ने उनको बहुत भला बुरा सुनाया। एक बार एक किसान ने अपने खेत की ज्वार की निगरानी का काम तुकाराम को सौंपा और उन्हें ताकीद किया कि बराबर सावधानी से निगरानी करना। चिडिया दाने न चुगने पाये। तुकाराम महाराज रखवाली पर तो गये किंतु भगवान के नाम स्मरण में डूब गये। उनको न खेत दिखता था न दाने चुगने वाली चिडियां। जब खेत का मालिक खेत में आया और उसने देखा कि चिडियां भुट्टों के दाने चुग रही है और तुकाराम अपने भगवत भजन में मस्त है तो वह बहुत क्रोधित हो गया और उसने तुकाराम महाराज को बहुत गालियाँ दीं। तुकाराम ने सब गालियां सुन लो और मौन हो रह गये। जब फसल निकाली गई तो हर साल से चौगुनी फसल हुई। खेत मालिक ने प्रसन्न होकर उन्हें बहुत ज्वार दे दी जो उनको साल दो साल खाने के लिए पुर सकती थी। तुकाराम के घर मे ज्वार के बोरे भरे हुए है. ऐसा इलाके के गरीब लोगों को पता चला तो वे सब ज्वारी मांगने के लिए तुकाराम के घर चले आये। तुकाराम ने सब ज्वार गरीबों में बाट दो। घर मे एक दाना भी नहीं बचा। अब तुकाराम केवल व्यक्ति नहीं रहा। पूर्ण मानव समाज ही उसका कुटुम्ब बन गया था।

अयं निजः परोवेत्ति गणना लघु चेतसाम्।
उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुंबकम्॥

धन स्त्री और प्रतिष्ठा ये परमार्थ के मार्ग मे बडे बडे गढ्ढे है।

कुछ साधक पहले से तो बच जाते है। लेकिन दूसरे गढ्ढे से बचना बहुत कठिन है। दोनों को बचाकर यदि कोई साधक आगे जाता है, तो वह प्रतिष्ठा के तीसरे गढ्ढे मे जाकर फंसता है। यह बात तो असीम मन संयम से ही साध्य है। तुकाराम महाराज ने इन तीनों गढ्ढों को पूरी तरह से पार कर लिया था। पर दारा और परद्रव्य उनके लिए "गोमास" के समान था। अपनी पत्नी से भी चार चार महीने उनकी मुलाकात नहीं होती थी। एक बार गाव के लोगों ने फुसलाकर एक वेश्या

को उनके एकांत स्थान में भेजा। उसने तुकाराम महाराज को अपने भाव भंगिमा से मोड लेने का प्रयत्न किया। उन्होंने उस स्त्री को कहा–

परावियां नारी रखुमाई समान।
हे गेलें नेमून ठायीं चेचि ॥१॥
जाईं वो तूं माते न करीं सायास।
आम्ही विष्णु दास तैसे नव्हों ॥
न साहावे मज तुझें हे पतन।
नको हे वचन दुष्ट वदों ॥२॥
तुका म्हणे तुज पाहिजे भ्रतार।
तरी काय नर थोडे झाले ॥

अर्थात, पर नारी हमे माता रखुमाई के समान है। हम विष्णुदास कभी भी पर नारी की इच्छा नहीं रखते। तेरा यह पतन मुझसे देखा नहीं जाता। तुम्हे यदि पति चाहिये तो गांव में बहुत लोग पडे है। इसलिए हे माते मुझे मोहने का प्रयास न करते हुए तू वापस चली जा। कनक, कांता और प्रतिष्ठा इन तीनों की इच्छाओं को जीतकर तुकाराम ने अपने परम विरक्ति का समाज को दर्शन दिया।

पूना के पास वागोली गांव में रामेश्वर भट्ट नाम के एक विद्वान ब्राम्हण रहते थे। वारकरी संप्रदाय के विषय मे उनका मत प्रतिकूल था। उस काल मे हिंदू समाज की जाति व्यवस्था बहुत कठोर थी। तुकाराम महाराज जाति से शूद्र है, फिर भी ब्राम्हण लोग उनके चरण छूते है, यह बात सुनकर रामेश्वर भट्ट क्रोधित हो उठे। तुकाराम महाराज को देहू ग्राम से निकाल देने का विचार उनके मन में आया। उनके मत से तुकाराम का भजन कीर्तन यह पाखंड था। वे उस क्षेत्र के धर्माधिकारी भी थे। उन्होंने देहू गांव के पटेल को बुलाकर तुकाराम को देश निकाला घोषित करने का आज्ञा पत्र दे दिया। पटेल ने वह आज्ञा पत्र तुकाराम महाराज को पढकर बताया, तुकाराम ने वह सुनकर रामेश्वर भट्ट से मिलने का निर्णय लिया। वे वाघोली गये। रामेश्वर भट्ट स्नान संध्या कर रहे थे। उन्होंने रामेश्वर भट्ट को दंडवत प्रमाण किया और अभंग गाना शुरू किया। वे अभंग स्वयं-स्फूर्त और बडे प्रासादिक थे। अभंग सुनकर रामेश्वर भट्ट बोले कि तेरे अभंगों में श्रुतियों के अर्थ ध्वनित होते हैं। तू शूद्र जन्मा है, तुझे यह वेदवाणी उच्चारण करने का कोई अधिकार नहीं, इसलिए तू अपना कवित्व आज से बंद कर। तुकाराम महाराज बोले, पांडुरंग की आज्ञा से मैं यह कवित्व कर रहा हूँ। आप ब्राह्मण हो ईश्वर मूर्ति हो आपके आज्ञा का पालन मैं करूंगा। इसके आगे अभंग रचना नहीं करूंगा किंतु आज तक जो अभंग रचे हैं उनका क्या करूं? रामेश्वर भट्ट ने कहा, तू अपने अभंगों को जल में डुबो दे। तुकाराम महाराज ने उनकी आज्ञा मानकर अपनी सभी अभंग रचना के कागज कपडे में बांध लिए, उसमें नीचे ऊपर पत्थर बांधकर उन सब अभंगों को इंद्रायणी के गहरे पानी में डूबो दिया। यह बात सब ओर फैल गई। जो भावुक जन थे उन्हें बडा दुख हुआ। उन्होंने निश्चय किया कि जब तक अब भगवान प्रत्यक्ष आकर मेरी सहायता नहीं करते तब तक मैं अन्न, जल त्याग कर यहीं पडा रहूंगा। यह तुकाराम महाराज की भक्ति की कसौटी का क्षण था। भगवान श्री हरि ने बाल वेश में आकर उन्हे दर्शन दिया और आलिंगन देकर पूर्ण समाधान किया और कहा कि जैसा मैंने

प्रल्हाद की रक्षा की थी वैसे ही तेरे अभंगों की बहियां मैंने सुरक्षित रखीं हैं। तेरह दिन के प्रायोपवेशन के कारण तुकाराम महाराज का शरीर मृतप्राय हो गया था श्वासोच्छवास बिलकुल मंद हो गया था तथा किसी भी प्रकार की हलचल देह में नहीं थी। चौदहवें दिन भगवान ने श्रद्धालु लोगों को आदेश देकर बतलाया कि तुकाराम के अभंग की सब बहिया इंद्रायणी के जल पर उतरा रहीं है आप उन्हें लेकर जावें। यह आदेश होने पर श्रद्धालू लोग इंद्रायणी की ओर दौडते हुए गए और देखा कि जो अभंग की बहियां तुकाराम महाराज ने तेरह दिन पहले डुबा दी थी वे सब जल पृष्ठ पर तैर रही हैं। जल से अभंग बाहर निकालने के बाद सब जन सपुदाय श्री विठ्ठल के नाम का उद्घोष करते हुए तुकाराम के तरफ गया। इस चमत्कार ने सब कुटिल तथा निंदक लोगों के मुंह बंद कर दिए और तुकाराम के संतत्व की ख्याति चहुं ओर फैल गई।

एकनाथ महाराज को शाति ब्रह्म कहते हैं। उनकी शाति किसी भी प्रकार के अपमान से छल से या त्रासदी से भंग नही हुई। तुकाराम महाराज के जीवन में भी उनकी कसौटी लेने वाले अनेक प्रसंग आये। उनसे मार्गदर्शन प्राप्त कर भगवद् भजन करने वाला उनका एक शिष्य था। उसकी पत्नी को उसका निरंतर भजन मे रमते रहना और घर की तरफ बिलकुल ध्यान न देना, कतई पसद न था। वह तो अपने पति की इस अवस्था का कारण तुकाराम महाराज को ही मानती थी उसने एक दिन जब तुकाराम महाराज उसके घर के सामने से गुजर रहे थे– खौलता हुआ पानी महाराज के शरीर पर डाल दिया। महाराज का पूरा बदन जल गया। भयानक दाह होने लग गया। उन वेदनाओं से तडपते हुए भी महाराज की वृत्ति मे कोई अंतर नहीं आया। पानी के बाहर निकाले गए मछली की तरह तडपने वाला तुकाराम अपने अभंग में कहता है–

"जळे माझी काया। लागला ओणवा ॥
धावरे विठ्ठला. मायबापा ॥

मेरी यह काया जल रही है. अंगार लगी है। हे विठ्ठल दौडो और इसका शमन करो। वे आगे कहते हैं, कि हे भगवान यह देह दो टुकडों में भंग हो जाएगी,, तुम ही शीतल मलम लेकर मां की तरह लगाओ। यहां दुसरे किसी का बल नही चलेगा। इतनी भयानक जलन होते हुए भी उन्होंने उस महिला से कुछ नही कहा। चुपचाप वेदना सहते रहे।

रामेश्वर भट्ट द्वारा तुकाराम को जो कष्ट दिया गया, उसका दंड भी भगवान ने उसे दिया। तुकाराम महाराज के प्रायोपवेशन काल मे रामेश्वर भट्ट वाघोली से नागनाथ जा रहे थे। रास्ते मे एक कुंए पर उन्होंने स्नान किया। तो उनके शरीर में अत्यंत दाह होने लगा। वह दाह शमन के लिए आलंदी में जाकर ज्ञानेश्वर महाराज की समाधि के पास जाकर सेवा करने लगे। उन्हे स्वप्न में आदेश हुआ कि महान भगवद् भक्त तुकाराम को कष्ट देने के कारण तुम्हारी यह दुर्दशा हुई है। तुम महाराज की शरण मे जावो तो सब ठीक हो जायेगा इसी समय यह बात उनके कानों में गई। कि तुकाराम के अभंगों की भगवान ने

उदक मे रक्षा की। उनका दूषित पूर्वाग्रह समाप्त हो गया, विद्वत्ता का अहंकार नष्ट हो गया और वे तुकाराम महाराज की शरण में गए।

तुकाराम महाराज के साधुत्व की कीर्ति शिवाजी महाराज के कानों तक पहुची उन्होंने राजसी सम्मान के कुछ साधन तथा द्रव्य देकर अपने सेवकों को तुकाराम महाराज की सेवा में भेज दिया। तुकाराम महाराज ने वह सब द्रव्यादि शिवाजी महाराज को वापस भेजा और साथ मे भगवद् भक्ति पर नौ अभंग भी लिखकर भेजें। शिवाजी महाराज तुकाराम की इस विरक्ति से बहुत प्रभावित हुए और समय मिलने पर तुकाराम का कीर्तन श्रवन करने जाने लगे। कीर्तनों का प्रभाव ऐसा था कि स्वराज्य निर्माता शिवराय भी राज काज से विरक्त होने लगा। यह बात जब शिवाजी महाराज की माता जीजाबाई ने देखी तब उन्होंने तुकाराम महाराज से मुलाकात करके शिवाजी की हालत बतलाई। तुकाराम महाराज ने शिवछत्रपति को उनके राज धर्म का यथोचित उपदेश कर फिर से राज कर्तव्य के पथ पर लगाया। तुकाराम महाराज के अवतार का कार्य अब समाप्त होने पर आया। उनकी आयु अब इकतालीस वर्ष की थी। इस जन्म में पाने लायक अब उनके लिए कुछ नही बचा था। तुकोबा अब पांडुरंग रूप हो गये थे। वे कहते हैं।

लवण मेळविता जळे। काय उरले निराळें ॥१॥
तैसा समरस जालो। तुजमाजी सामावलों ॥घ्रु॥
अग्नि कर्पूराचे मेळी। काय उरली काजळी ॥२॥
तुका म्हणे होती। तुझी माझी एक ज्योति ॥३॥

बीज भाजुन केली लाही। अम्हां जन्म मरण नाही॥ आकाराची कैसा ठाव। देह प्रत्यक्ष झाला देव साकरेचा नव्हे ऊस। आम्हा कैचा गर्भवास॥ तुका म्हणे अवघा जोग। सर्वा घटीं पांडुरंग॥ अर्थात जल में यदि नमक मिलाया तो दोनों एक हो जाते हैं। वैसे ही मैं पाडुरंग में समरस हो गया हूं। अग्नि में कर्पूर जलाने पर क्या बचेगा? मैं भी पाडुरंग की ज्योति मे वैसे ही समा गया हूं। अहं बीज को भूनकर अब उसकी लाई बन गई है। अब वह बोने लायक नही रही। अब इस मानव देह का प्रयोजन ही नहीं। यह देह प्रत्यक्ष देव बन गया। शक्कर बोने से गन्ना नही ऊग सकता। अब गर्भवास से जन्म छूट गया। सर्वत्र पाडुरंग से ही योग हो गया। सर्वत्र वही फैला हुआ है।

सदेह बैकुंठ जाने का तुकाराम महाराज का निर्णय था। उन्होंने तो अपना मकान निरंजन में बनाया था। श्री हरि के रंग मे तुकोबा पूर्ण रूप से मिल गये थे देह भाव छूट गया था। प्रयाण समय नजदीक आया। फाल्गुन का मास शुरू हो गया। फाल्गुण सुदी द्वादशी को अपनी पत्नी जीजाबाई को पूर्ण बोध किया। फाल्गुन वदी प्रतिपदा को रात्रि के समय मे तुकाराम महाराज कीर्तन करने लगे। कीर्तन मे भक्ति की पराकाष्ठा हो गई। तुकोबा कहते है– उस दिन तुकोबा अपने आपमें नहीं थे। उनके मुख से स्वय पाडुरंग ही भजन कीर्तन कर रहे थे। वे मृत्यु लोक में दिखते थे किंतु बैकुंठ लोक से तन्मय हो गये थे। उन्होंने अपने अभंग में सनकादिक संतों से प्रार्थना की कि भगवान से मेरा नमस्कार कहिये और मुझे मेरे मायके ले जाने के लिए जल्दी से

किसी को भेजिये । उन्होंने गरुड से प्रार्थना की कि जल्दी से भगवान को ले आवो । मा लक्ष्मी से कहा कि शेषशायी को जल्दी जगाओ । शेष भगवान से उन्होंने कहा कि उस हृषीकेश को जल्दी जगा दो । तुकाराम महाराज का कीर्तन चालू था । प्रत्यक्ष श्री विष्णु गरुड पर बैठकर तुकाराम को लेने आये और तुकराम को कीर्तन करते करते ही बैकुंठ ले गए। यह किसी को दिखना तो असंभव था । किंतु तुकाराम कीर्तन करते करते अदृष्य हो गए, यह सब जन समुदाय ने देखा ।

सदेह मुक्ति का यह भारत वर्ष के इतिहास मे पहला प्रसग नहीं है । कौशिक की भगिनी सत्यवती सशरीर स्वर्ग सिधार गयी थी । बाल कांड के सर्ग ३४/८ में कहा है–

"सशरीरा गता स्वर्ग भर्तारमनु वर्तिनी ।"

विश्वमित्र ने अपने तपोबल से त्रिशंकु को सशरीर स्वर्ग भेज दिया । अयोध्या कांड में ब्रह्मर्षि वशिष्ठ भगवान रामचंद्र को उनके पूर्वजों की नामावली बतलाते समय त्रिशंकु के संबंध में कहते है-

"स सत्य वचनाद्वीरः सशरीरा दिवंगतः ।"

किष्किंधा काड में उल्लेख है कि सुग्रीव भगवान राम के साथ एक वन के पास आये उस समय उस वन का पूर्व इतिहास कहते समय सुग्रीव राम से कहते हैं –

अत्र सप्त जनानाम मुनयः संशित व्रताः ।
सप्तैया सन्नधः शीर्षाः नियतं जलशायिनः ।।

सप्तरात्रकृताहारा वायुना वनवासिनः ।
दिवं वर्ष शतैयाताः सप्तभिः सकलेवराः ।।

उत्तर कांड मे प्रभू रामचंद्र तथा उनके भाई उनके साथ सशरीर विष्णु तेज में लुप्त हो गये ऐसा उल्लेख है–

"विवेश वैष्णवं तेजः सशरीरं सहानुजः ।"

महाभारत के स्वर्गारोहण पर्व में धर्मराज के विषय में कहा हैं–

गंगा देवनदीं पुण्यां पावनीमृषसंस्तुताम ।

अवगाह्य ततोराजा तनुम तत्याज मानुषीम् ।

ततो दिव्य वपुर्भूत्वा धमराजो युधिष्ठिरः ।।

मध्ययुगीन काल में संत कबीर साहब अपने आयु के १०१ वें साल में एक दिन अपने शिष्यों से कहने लगे कि हमारे लिए गुलाब के फूलो की सेज बनाइये । वे सैज पर लेट गये और शाल ओढ लिए । कुछ समय बाद शिष्यों ने शाल उठाकर देखा तो वहां गुलाब पुष्पो के सिवाय कुछ नही था । सिख धर्म सस्थापक गुरुनानक का देहांत आयु के ७० वे साल में हुआ । उनका अंतिम संस्कार हिंदु पद्धति से करना या मुसलमानी पद्धति से दफन करना इस पर शिष्यों में विवाद पैदा हो गया । एक शिष्य ने गुरु नानक देव के शरीर पर से वस्त्र उठाया तो मृत देह था ही नहीं । ज्ञानेश्वर महाराज की भगिनी मुक्ता बाई ऐसे ही लुप्त हो गई । चैतन्य महाप्रभू श्रीकृष्ण मंदिर में गए और वहीं से लुप्त हो गए ।

ऐसा कहते हैं कि नृसिंह अवतार मे प्रल्हाद, रामावतार में अंगद, श्री कृष्णावतार में उद्धव और कलियुग मे वही पहले नामदेव और बाद मे तुकाराम हुए । तुकाराम महाराज अपने अभंग में स्वयं कहते हैं–

मागें बहुतां जन्मी । हेंच करित आलों आम्ही ।
भवतापश्रमी । दुःखें पीडिले निववूं त्या ।।१।।
गर्जू हरी चे पवाडे । मिळवूं वैष्णव बागडे ।
पाझर रोकडे । काढूं पाषाणामध्यें ।।

अर्थात पिछले बहुत जन्मों से हम यही करते आये हैं। इस संसार ताप से जो पीडित हो गए उनको सन्मार्ग दर्शन करेंगे। अपने जैसे विष्णु भक्त मिलाकर श्री हरि की महिमा बढायेंगे और पाषाण हृदयों मे भी भक्ति रस का निर्झर बहायेंगे।

ऐसे संत श्रेष्ठ को साष्टांग दंडवत करते हुए यह चरित्र लेखन पूर्ण करता हूं।

ॐ तत् सत्

श्री वासुदेव योग प्रतिष्ठान के संकल्प सिद्धी हेतू हमारी शुभ कामनाएं

ऋतुजा फायनेंशियल कांसल्टेंट्स
इंदिरा मार्केट, वर्धा

Let there be many happy returns of this auspicious day

JYOTI RUBBER ENGINEERS

E/32 Industrial Area, Govindpura, BHOPAL– 462 023

Gram : Jyotirubber *Phone : 546609 (O) 553282 (R)*

Manufacturers of : Vulcanised Rubber Engineering Goods Rubber Rice Roller and orher Import Substitute items.

श्री वासुदेव योग प्रतिष्ठान के संकल्प सिद्धि हेतु हमारी शुभ कामनाएं

★ **मे. दुर्गा कंस्ट्रक्शन** ★

हिंगणघाट. जि वर्धा

श्री एस. के. मानुसमारे

हिंगणघाट जि. वर्धा

कांबले ब्रदर्स वर्धा

बिल्डिग मटेरियल सप्लायर

प्रो. नरेश कांबळे वर्धा

श्री आर. पी. खोत वर्धा

सिव्हिल कॉन्ट्रॅक्टर

★ **श्री लक्ष्मणराव वानखेडे** ★

सिव्हिल कांट्रॅक्टर वर्धा

पटेल ॲटोमोबाइल्स

मेनरोड वर्धा

सभीप्रकार के टू व्हील के स्पेयर पार्ट के विक्रेता

ज्योती कंस्ट्रक्शन कंपनी

बिल्डर्स ॲन्ड प्रमोटर्स

१-रामकिष्ण नगर खामला, नागपूर

हम किसकी उपासना करते हैं।

–सौ. उषा घरोटे, वर्धा

प्रारंभ से ही मानव को इस सृष्टि में किसी श्रेष्ठ शक्ति के अस्तित्व का आभास सदा ही रहा है। सृष्टि, उसकी कुछ नियमबद्ध रचना और उसका संचालन मानव की शक्ति के परे है। यह उसे उसके कुछ अनुभव से ज्ञात होने लगा। तब से इस शक्ति को अपनीबुद्धि के अनुसार वह पूजता रहा। प्राचीन काल में प्रत्येक देश मे अनेक देवताओं की पूजा की जाती थी। प्रकृति के प्रत्येक कार्य का स्वामी या संचालक इस रूप में अन्यान्य देवताओं को भी मान्यता दी।

पाश्चात्य इतिहास के अनुसार एक परम देवता की कल्पना सबसे पहिले इसवी पूर्व १४ वीं सदी में मिश्र नरेश अमेनहोतेय चतुर्थ ने शुरू की। उसके लगभग ८०० वर्ष बाद झरतुस्त्र लगभग ६०० वर्ष ईसा पूर्व का ईरान में अविर्भाव हुआ। इन्होंने ही पारसी धर्म की। स्थापना की इनके अनुसार अहुरमज्द परम प्रभु हैं। जिनकी दुष्प्रवृत्ति का देवता अहिरमन से लगातार युद्ध चलता है और चलता रहेगा।

भारतीय सभ्यता मे भी अनेक देवताओं की उपासना वैदिक काल से चलती आ रही है। उस समय लोग अपनी रक्षा के लिए, स्वास्थ्य के लिए, अपनी समृद्धि के लिए नानाविध देवता जैसे रुद्र, सवित्र, पूषन्, आश्विनकुमार आदि की आराधना करते थे ऐसा प्रमाण है। वैदिक काल के बाद कर्मकाण्ड बहुत ही बढ गया। स्वर्ग प्राप्ति, राज्य प्राप्ति, अपत्य प्राप्ति के लिए भी यज्ञ के द्वारा नानाविध देवताओं की उपासना होती थी। रामायण महाभारत में हम देखते हैं कि अस्त्र शस्त्र प्राप्ति के लिए भी देवताओं की उपासना चलती थी। इससे यह प्रतीत होता है कि मानव इस लोक में सुख समृद्धि के लिए और अत्यन्त सुख, वैभव से परिपूर्ण ऐसे परलोक के प्राप्ति के लिए उपासना करते थे।

हमारी भारतीय संस्कृति के अनुसार इस विश्व के निर्माता संरक्षक, तथा सहारक देवता ब्रह्मा, विश्णु, महेश हैं। ये तीनों सृष्टि के उस विशिष्ट स्थिति के अधिष्ठाता है। फिर भी इनकी प्रतिमा हमारे सामने आज तक किसी न किसी प्रकार के साधनावस्था के रूप में ही प्रतिष्ठित हुई है। हम देखते हैं कि ब्रह्माजी कमलासन पर साधनावस्था में बैठकर किसी का ध्यान कर रहे हैं। शेषशायी श्री विष्णु योग निद्रा में स्थित है। तो शिवजी भी कैलाश पर्वत पर पद्मासन लगाए हुए, आंख बंद किए हुए बैठे हैं। ये स्वयं सृष्टि के अधिष्ठाता देवता हैं। इन्हें किस तत्व के प्राप्ति की अपेक्षा है, जिसकी ये आराधना कर रहे है।

इसका अर्थ यह है कि ये तीनों इनसे श्रेष्ठ किसी शक्ति की उपासना में लगे हुए हैं। उसका ही ध्यान कर रहे हैं, जो इन सबसे परे

है। श्रेष्ठ है। जिसका वर्णन गीता में भगवान श्रीकृष्णने किया है–

उपद्रष्टाऽनुमन्ता च भर्ता भोक्ता महेश्वरः।
परमात्मेति चाप्युक्तो देहेऽस्मिन् पुरुषः परः॥
(अध्याय १३/२२)

इस प्रकृति के कार्यों को उसके पास बैठकर देखनेवाला तटस्थ निरीक्षक **Imapartial Observer** है। उसे अनुमोदन देनेवाला, उसमे कुछ ना जमा करने देनेवाला (या उसका पालन पोषण करने वाला-भर्ता) उसका उपभोग करने वाला, यही परमात्मा, महेश्वर, श्रेष्ठ पुरुष है।

यही परम श्रेष्ठ, प्राचीन, सबको प्रकाशित करनेवाला आत्मा है। सभी वेदान्तियोंने, उपनिषद्कारों ने, तत्वज्ञों ने इसी का वर्णन किया है। दर्शनों में वर्णित ईश्वर भी यही है। पातंजल योग सूत्र में समाधिपाद के ३६ वे योग सूत्र में इसका वर्णन– पूर्वेषामपि गुरूः कालेनानवच्छेदात् ऐसा किया है। यही ईश्वर पूर्व उत्पन्न ब्रह्मादिकों का गुरू है। और यह काल से परिछिन्न (परिमित) नहीं है।

हमरे शास्त्र के अनुसार इन ब्रह्मा, विष्णु, महेश की कुछ मर्यादित आयु है। ये ब्रह्मादि देवता सृष्टि के सृजन के बाद उत्पन्न हुए है। परंतु यह सभी देवता काल कवलित होते है। यह सर्वदा ईश्वर (परमात्मा) कालातीत है। यह सर्वदा विद्यमान है। यह अनादि और अनन्त है। इसे कोई कालमर्यादा नही। इसलिए यह सत् श्री अकाल है। यही ज्ञान देता है। ज्ञान का यह प्रकाशक है यही सबका गुरु (शिक्षक और श्रेष्ठ) है और उपदेष्टा है।

काल स्वयं जिससे उत्पन्न होता है उस ईश्वर का वर्णन गीता मे किया है–

कविं पुराणं अनुशासितारं
अणोरणीयां समनुस्मरेद्यः।
सर्वस्य धातारं अचिन्त्यरूपं
आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्॥

यह कवि याने सर्वज्ञ, क्रान्तदृष्टा, शास्ता, अणु से भी सुक्ष्म, सबका आधार या कर्ता, अचिन्त्य स्वरूप और अंधकार के परे रहनेवाले सूर्य से भी तेजस्वी है। इसी परमात्मा की हम उपासना करते है।

आज भी हम देखते है कि अधिकतर लोग देवताओं की उपासना उनकें कष्ट या संकट दूर करने के लिए ही करते हैं। इस कारणवश वे न केवल विविध देवी देवताओं की आराधना करते है अपितु अनेक साधुसंतो की भी उपासना करते है। कभी कभी कुछ स्थानिय देवता भी उपास्य देवता हो जाते हैं।

क्या हमारे जीवन का उद्देश्य इतना सीमित है कि हम केवल अपने कष्ट दूर करने के लिए और सुख प्राप्ति के लिए ही कुछ उपासना करें? इस दृश्य ससार के परे भी कुछ ऐसा तत्व है, जिसकी प्राप्ति के लिए हम ही नहीं, हमारे श्रेष्ठ देवता भी उपासना करते हैं।

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र रुद्र मरुतः
स्तुन्वंति दिव्यैः स्तवैः।
वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैर्गायंति
यं सामगाः॥

पू. गुरुदेवके प्रवचनसे–

हम गुण देखें. न कि दोष। गुण से दोष दूर दूर होते है। दोष जाए ऐसे शब्द आप प्रयोग करें, ऐसा व्यवहार रखें। काने को काना नहीं कहना। वह काना है यह सत्य है. पर व्यवहार में उसको काना नहीं कहना। आप तो काने नही है ना ? फिर दूसरे को काना क्यों कहे ? ये दोष देखना है। हम दोष न देखें, गुण देखें। यह आदत डालनी चाहिये, अपने घर में बालबच्चों में। अपने सगेसंबंधियों में भी इसी प्रकार से रहें। देखिये कितना आनंद आता है गृहस्थी में।

ध्यानावस्थित् तद्गतेन मनसा
पश्यंति यं योगिनो।
यस्यांतम् न विदु: सुरासुरगणा:
देवाय तस्मै नम: ॥

इस उपासना के लिए मानवी शरीर अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके ही माध्यम से हम आत्म-स्वरूप का बोध तथा परमानंद की प्राप्ति हेतु, परब्रह्म में लीन होने का प्रयत्न कर सकते हैं। सद्गुरु के मार्गदर्शन से, योग्य साधना तथा नियमित अभ्यास द्वाराही यह ज्ञान प्राप्त कर सकता है। और इसी के द्वारा वह मोक्ष या मुक्ति पा सकता है, जो कि उसका परम जीवनोद्देश्य है। यही प्रत्येक मानव का कर्तव्य तथा विशेषाधिकार है।

प. पू. गुरुदेव श्री वासुदेवजी तिवारी के ८४ वें जन्मदिवस पर हार्दिक शुभकामनायें

मे. कविता ट्रेडर्स, वर्धा

प्रो. दिलीप द्रोण, वर्धा

परम पूज्य गुरुजी के ८४ वे जन्म दिवस के उपलक्ष में हार्दिक बधाईयाँ

हर्षल कंस्ट्रक्शन, हिंगणघाट
जि. वर्धा

सहयोगी संस्था

मे. उमा कंस्ट्रक्शन्स, हिंगणघाट

० हमारी विशेषताएँ ०

- सर्व प्रकार के मार्ग पुल तथा इमारत निर्माण। सभी प्रकार के निर्माण कार्य में उच्च गुणवत्ता की परंपरा। निश्चित कालावधी में कार्यपूर्ती का विश्वास।

प्रो.- आर. डी गड्डमवार

-हार्दिक शुभेच्छा-

मे. व्ही. एम. डी.
कंस्ट्रक्शन, हिंगणघाट
जि. वर्धा

मार्ग तथा पुल निर्माण कार्य में
अग्रसर संस्था

प्रो.- व्ही. एस. डेहणे

-हार्दिक शुभेच्छा-

मे. मधुसुदन लक्ष्मणराव
घडे
सराफ लाईन, वर्धा

सोने चांदी के तारण व्यवहार किये जाते है।

प्रामाणिकता तथा विश्वसनीयता
यही हमारा परंपरागत
विशेषता है।

परम पूज्य गुरुदेव के प्रवचन पर आधारित उद्धरण –

सत्संगति का महत्व

तात स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरिय तुला इक अंग।
तूल न ताहि सकल मिलि, जो सुख लव सत्संग॥

वशिष्ठ और विश्वमित्र को सब जानते हैं। उन दोनों का ही यह प्रसंग है। विश्वामित्र जी ने सात हजार वर्ष तपस्या की थी और वशिष्ठ जी थे ब्रह्मवादिन्- माने आत्म साक्षात्कारी। वे परम भागवत थे।

प्रल्हाद, नारद, पराशर, पुंडलीक, व्यासांबरीष
शुकशौनक, भीष्म, दाल्भ्याम।
रूक्मांगदार्जून, वशिष्ठ, विभीषणादीनि पुण्यानिमान
परम भागवतान स्मरामि।

एक दिन विश्वामित्रजी वशिष्ठजी से बोले– आप तो अपनी आत्मदर्शन की ही रट लगाते है। मैंने तो सात हजार वर्ष तपस्या की है। अपने तपोबल से प्रतिसृष्टि का निर्माण किया हैं। देवो के अस्वीकार करने पर भी अपने तपोबल से राजा त्रिशंकु को स्वर्ग भेज दिया है। आपके आत्मज्योति दर्शन से भी मेरे तपोबल की शक्ति कहीं अधिक है। वशिष्ठजी तो बडे शांत स्वभाव के थे। वे तो शांति ब्रह्म थे। वे बोले- भाई लव मात्र भी आत्म दर्शन हो जाय तो वह सबसे बडा है। उसकी बराबरी कोई भी तप नहीं कर सकता।

विश्वामित्रजी तो मानने को ही तैयार नहीं हुए, उन्होंने आपस में तय किया कि इसका निर्णय किसी तीसरे आदमी से ही करवा लेते है। निर्णय के लिए वे पहुंचे भगवान शेषनाग के पास। भगवान शेषनाग अपने सर पर पृथ्वी का बोझ लिए खडे थे। वे इन दोनों से बोले– 'भाई, मैं तो इस पृथ्वी के बोझ के मारे दबा जा रहा हूं इसे हटा दो तो शांत चित्त से निर्णय कर सकूगा।

अब सवाल आया कि भगवान शेषनाग के सर पर से धरती का बोझ कौन हटाये। शेषनाग ने वशिष्ठजी से कहा आप तो ब्रह्मर्षि कहलाते हैं। तो आप ही पहले यह काम कीजिये। वशिष्ठजी बोले ठीक है। अगर लव मात्र भी हमें आत्म ज्योति का दर्शन हुआ हो तो यह पृथ्वी शेषनाग के सर से उठ जायेगी। पृथ्वी ऊपर उठ गई।

अब शेषनागजीने विश्वामित्रजी से कहा कि अब आप भी अपनी शक्ति से यह कार्य कर दिखाइये तो फिर निर्णय दूंगा। विश्वामित्रजी भी अपना संकल्प बोले- "मेरी सात हजार वर्ष की तपस्या के फल से हे पृथ्वी तू उठ जा।" पृथ्वी टस से मस नही हुई।

शेषनाग को निर्णय देने की जरूरत ही नहीं पडी। यह अपने आप ही हो गया। oo

श्री वासुदेव योग प्रतिष्ठान द्वारा निर्माणाधीन
आश्रम प्रकल्प को हमारी शुभकामनायें

आकाश गंगा टाईल्स
इंदिरा मार्केट, वर्धा

महायोगी श्री वासुदेवजी महाराज के ८४ वें जन्मदिवस पर
हार्दिक बधाइयां

वैभव क्लाथ स्टोर्स
इंदिरा मार्केट, वर्धा

VASUDHIEV
MARKETING ENTERPRISES
Pro.— Mrs. Sudha Umbarkar
Authorised Dealer :
Kajaria Ceramic Tiles, Holly Wood & Bunkingham Laminates
Also deals in :
Mosaic, Ceramic & Glazed Tiles Sanitarywares, Grey & White Cement, C. P., G. I., S. W., A. C. pipes & fittings, Bath tubs, Kitchen sinks, Water Geysers, Water Storage tanks, Doors, Plywood, Sunmica, Foremica, Marble & Granite
11, Naidu chambers, Opp. Amarjyoti
Lokmat Square, NAGPUR

With Best Compliments From

VASUDHIEV
SALES CORPORATION
Pro,— Miss. Varsha Umberkar

Sole Distributor :
Crown Mosaic Tiles
Authorised Dealer :
Rajashree Cement

B- 3 Ujwal Flats, Rahate Colony,
NAGPUR
Phone : 530271

योग क्या है

–एक साधक

योग के विषय में अनेक प्रकार की धारणायें जनमानस में प्रचलित हैं। सामान्य रूप में योगी शब्द से, अपनी आंखों के सामने, प्राणायामादि प्रकारों से ध्यान लगाता हुआ, अनेक प्रकार की चमत्कारिक क्रियाओं को करनेवाला शक्ति सम्पन्न पुरुष आता है। आजकल तो अष्टांग योग का केवल एक अंग (आसन) योग शब्द से जाना जाता है। शहरी जीवन के अभिशाप से अनेक प्रकार से व्याधिग्रस्त स्त्री पुरुष तथा बड़े शहरोंमें रहनेवाले कुछ अभिजात वर्गीय लोग योगा क्लासेस अटेंड करना एक फैशन की बात मानते हैं। किंतु योग का सही स्वरूप, सही उद्देश्य कतिपय लोगों की समझ मे आता है। इस भारत वर्ष में ऋषि मुनियों की विचार आचार संपन्न परंपरा सहस्त्रों वर्षों से चली आ रही है। प्राचीन काल के ऋषि-मुनि, मध्ययुगीन संत, अर्वाचीन काल के भगवान रामकृष्ण, स्वामी विवेकानद, योगी अरविंद तथा वर्तमान में सद्गुरु श्री वासुदेवजी तिवारी सत्पुरुष योगी ही हैं। इसीलिए जनमानस में योग विषयक भ्रांत कल्पनाओं को दूर कर योग का सही अर्थ समाज के सम्मुख रखने का यह एक अल्प प्रयास है।

योग का अर्थ है जुड़ना। "युज" धातु से यह शब्द बना है। षड्दर्शनों में योग एक स्वतंत्र दर्शन है। इस दर्शन की विशेषता यह है कि इसमें थ्योरी के साथ ही उसे प्रत्यक्ष करने की विधि भी बतलाई जाती है। इस दर्शन का अधिकृत ग्रंथ आज उपलब्ध है। वह है भगवान पतंजलि का लिखा हुआ पातंजल योग सूत्र। यह ग्रंथ अपने आप में अत्यंत अधिकृत तथा परिपूर्ण है। यह भारतीय मानस शास्त्र का अनोखा ग्रंथ है। इसके शुरू मे ही भगवान पतंजलि ने स्पष्ट किया है कि वे योग की शिक्षा देने वाले ग्रंथ का प्रारंभ करते हैं। वह प्रथम सूत्र है। "अथ योगानुशासनम्" इस सूत्र का प्रथम शब्द "अथ" अनुबंध चतुष्टय को स्पष्ट करनेवाला है। यह अनुबंध है :–

१– विषय (माने इस शास्त्र का विषय क्या है?)
२– प्रयोजन (इसका प्रयोजन क्या है ?)
३– अधिकारी (इसका अधिकारी कौन है ?)
४– संबंध (इसके साथ शास्त्र का संबंध क्या है ?)

१. इस दर्शन का विषय योग है।
२. योग द्वारा स्वरूपस्थिति (आत्मस्थिति) कराना इसका उद्देश्य है।
३. मुमुक्षु एवं जिज्ञासु साधक इसके अधिकारी हैं।
४. इसका योग से प्रतिपाद्य प्रतिपादक भाव संबंध है। स्वरूपस्थिति और योग का साध्य साधन भाव संबंध है। स्वरूपस्थिति और अधिकारी में प्राप्य प्रापक भाव संबंध है। अधिकारी और योग का कर्तृ कर्तव्य भाव संबंध है।

इसका दूसरा शब्द है योगानुशासनम्। अनु + शासन शब्द से यह स्पष्ट होता है कि इस विषय की शिक्षा माने शासन पहले से ही विद्यमान था। याज्ञवल्क्य स्मृति में कहा गया है– हिरण्यगर्भो योगस्य वक्ता नान्यः पुरातनः। हिरण्यगर्भ (ब्रह्म) ही योग के पुरातन वक्ता हैं। उसने पुरातन और कोई वक्ता नहीं। महाभारत मे कहा गया है– "सांख्यस्य वक्ता कपिलः परमर्षिःस उच्यते। हिरण्यगर्भो योगस्य वक्ता नान्यः पुरातनः।"

मोक्ष या अपवर्ग को लक्ष्य में रखकर सभी दर्शनों की रचना हुई है। किंतु योग दर्शन ने इसे अति सुगमता सरलता नियम पूर्वक तथा ज्ञानपूर्वक और क्रियात्मक रुप से बतलाया है। साधनों के भेद से योग में निम्न भेद होते हैं–

१– राजयोग (ध्यान योग, समाधियोग)।
२– ज्ञानयोग (सांख्ययोग)
३– कर्मयोग (निष्काम कर्म, अनासक्ति योग)।
४– भक्ति योग।
५– हठयोग।

इस दर्शन का मुख्य विषय राजयोग है। और राजयोग मे उपर्युक्त सभी योग आते है। हठयोग प्रदीपिका में यह तो स्पष्ट ही कहा गया है– "राजयोग विना पृथ्वी राजयोग विना निशा (कुंभक, प्राणायाम), राजयोग विना मुद्रा विचित्रापि न शोभते ॥

अब इस योग का स्वरुप बतलाते हुए भगवान पतंजलि कहते हैं।
"योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः"।
चित्त की वृत्ति का निरोध होना ही योग है। "चित्त" यह पिंडगत प्रकृति है। वह सर्व समावेशक संज्ञा है।

अंतःकरण चतुष्टय में मन, बुद्धि अहंकार समाविष्ट है। यह सबको ज्ञात है। इस संपूर्ण अंतःकरण को चित्त कह सकते हैं। चित्त की रचना त्रिगुणों की विषमता से होती है। जहां त्रिगुणों की साम्यावस्था होती है वहां चित्त लय होता है। इस संपूर्ण संसार को दृष्य कहते है। मनुष्य (जीवात्मा) अपने चित्त द्वारा इस दृष्य का भोग लेता है। इसलिये उसे द्रष्टा कहते है। जब कोई भोग्य वस्तु या दृश्य चित्त के सामने आती है तब चित्त दृश्याकार होता है। सामान्य मनुष्य का चित्त भोग्य वस्तुओ के संपर्क में आकर सदैव क्षुब्ध सागर की भांति अशांत ही रहता है। दृष्य को देखकर चित्त में जो लहरें या कंपन उठते है, उन्हें ही विकार या वृत्ति कहते है। यह वृत्ति पांच प्रकार की होती है–

१) प्रमाण २) विपर्यय ३) विकल्प
४) निद्रा और ५) स्मृति।

यह स्थूल रुप से वृत्तियों का वर्गीकरण हुआ। इन वृत्तियों के निरोध से क्या साध्य होता है? समाधिपाद के तीसरे सूत्र मे भगवान पतंजलि बतलाते है– "तदा द्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम्।" अर्थात चित्त की ऊपर लिखी हुई वृत्तियों का निरोध होने से द्रष्टा की स्वरुप मे (आत्म रुप में) अवस्थिति होती है। चित्त की वृत्तियों का निरोध चित्त की अवस्थाओं को पकडकर और उन्हे अभ्यास द्वारा लांघकर किया जाता है। चित्त की अवस्थाये पांच प्रकार की होती है।

१. मूढ : इस अवस्था मे तमोगुण प्रधान होता है। तथा रज और सत्वगुण गौण होते हैं। इस अवस्था में मनुष्य में निद्रा, मोह, भय आलस्य, दीनता आदि स्वभाव विशेष पाये जाते है। इस अवस्था के चित्त वाले मनुष्य काम, क्रोध, मोह इत्यादि अवस्थाओं से भरे रहते है। यह नीच मनुष्यों की चित्तावस्था है। इसमें चित्त संसार की सभी बातों में भटकता रहता है। किंतु इसमें भी आगे की अच्छी अवस्थाओं में संक्रमण करने की इच्छा छिपी रहती है।

समर्थ रामदास स्वामी अपने प्रसिद्ध ग्रंथ दासबोध मे त्रिगुणों का विश्लेषण करते हुए तमोगुणी मनुष्यों के स्वभाव के कुछ उदाहरण देते हैं। वे निम्न प्रकार के हैं।

संसार के दुख होने से खेद होना, एकदम से क्रोध आना, क्रोध आने पर माता, पिता, भाई, बहन, पत्नी आदि को ताडन करना, दूसरे का प्राण लेना या आत्महत्या करना, युद्ध देखने की बहुत इच्छा होना, किसी भी निश्चय पर स्थिर न रहना, बहुत निद्रालु होना, बहुत भूख लगने पर कैसा भी अन्न ग्रहण करना, किसी प्रियजन के मरने पर खुद आत्महत्या करना, जीव जंतुओ को मारने की तीव्र इच्छा होना, द्रव्य के लिए स्त्री हत्या, बाल हत्या, ब्रह्म हत्या, गोहत्या आदि करना, अत्यंत उद्दण्ड होना, ईश्वर भक्तो को सताना, मंदिरादिकों का विध्वस करना, हरे फल फूलों के पेड तोडना, काटना, पापाचरण का भय न होना, निष्ठुर होना, स्वधर्म मे रुचि न होना, ज्येष्ठों का वचन सहने की इच्छा न होना, शीघ्रकोपी होना, आलसी, मंदबुद्धि होना, भूत विद्या, प्रेत विद्या का अभ्यास करने की इच्छा होना, द्रव्यार्जन के लिए अपने ही शरीर को जलाकर या शस्त्राघात करके हाथ पांव में बेडियाँ आदि लगाकर लोगों को आकर्षित करने का प्रयास करना, देवालय के सामने जीव दान देना, निराहार, उपवास, पंचाग्नि साधन, जमीन में गाड लेना, सकाम अनुष्ठान करना, नख या केश बढाना, हाथ ऊपर करके एक पाव पर खडे होना या किसी साधना के लिए मौन व्रत का पालन करना, मूर्तियों को फोडना, ईश्वर निंदा करना, सत्संग का तिरस्कार करना आदि।

२. क्षिप्त : जब मनुष्य अपने संकल्पों द्वारा कुछ अच्छा कार्य करने लगे तो तमप्रधानता से रजप्रधानता की ओर संक्रमण होता है। इस अवस्था मे तम तथा सत्वगुण गौण होते है। इसे क्षिप्तावस्था कहते हैं। यह साधारण संसारी मनुष्यों की अवस्था है। जहां पहिली मुढावस्था मे केवल विनाश तथा अकर्मण्यता की प्रवृत्ति (*Indolence*) अज्ञान अंधश्रद्धा आदि स्वभाव विशेष पाये जाते हैं वहां इस दूसरी अवस्था में ससार की भोग्य वस्तुओं की प्राप्ति के लिए अथक भागदौड पायी जाती है। इसमें काम्य वस्तुओं के लिए अनुराग तथा उसमे बाधा उत्पन्न करनेवालों के लिए द्वेष चित्त मे भरा रहता है।

अपने घर संसार के प्रति बहुत आकर्षण होता हैं। अच्छे खाने पीने और पहनने की इच्छा होना, अपनी देह, शक्ति संपत्ति आदि का बडा अहकार होना, केवल अपना ही अच्छा होने की इच्छा होना, काम विकार बढना, संसार की बहुत चिंता मन में होना, दूसरों के वैभव का

आकर्षण होगा, जो भी दिखे वह अपने पास
होने की इच्छा होना और प्राप्त न होने पर
दुःख होना। दूसरों पर व्यंग्य कसने के लिए
विनोद का आश्रय लेना, श्रृंगार आदि की बहुत
इच्छा होना, मनोविनोदार्थ अनेक प्रकार को
कलाओ की या खेलों को इच्छा होना, भक्ति
वैराग्य आदि में अरूचि होना आदि।

३. विक्षिप्तावस्था : संसार की सर्व साधारण
बातों में पूर्ण रूप से डूबे हुए मनुष्यों की अवस्था
का वर्णन क्षिप्तावस्था में आया हुआ है। जब
मनुष्य को इन बातों में अरूचि पैदा होती है
और वह सांसारिक बातों से ऊपर उठकर
अपने आपसे पूछने लगता है कि मैं असल में
क्या हूं? "कोऽहम"? मैं कौन हूं और इस
सृष्टि से मेरा क्या संबंध है? यह अपने आपसे
प्रश्न करने वाले को ही जिज्ञासु कहते हैं। वह
अवस्था सत्वगुण प्रधान होने से निर्माण होती
है। चित्त की इस अवस्था का नाम है,
"विक्षिप्तावस्था।" इस अवस्था में रज और
तम गुण सत्व से दबे होते है, जिस चित्त में
सत्वगुण उभरने के कारण विक्षितावस्था आती है
वही मनुष्य योग की ओर मुडता है। इसमे
सांसारिक बातों से मनुष्य का मन हटने लगता
है और वह अध्यात्मिक मार्ग पर चलने का
प्रयास करता है धर्माचरण में रूचि होना, वैराग्य
की वृत्ति बढना, यह लक्षण ऐसे मनुष्य मे पाये
जाते है। परिणामतः उसमें सुख, प्रसन्नता, क्षमा,
श्रद्धा, धैर्य, चैतन्य, उत्साह, वीर्य, दान, दया
आदि सद्गुण उभरते है। श्री दासबोध में
समर्थ रामदास स्वामी लिखते है, कि सत्वगुण
के उभरने से परमार्थ को ओर वह व्यक्ति जाने
को इच्छुक होता है। इसमे प्रपंच से अधिक

ईश्वर से प्रेम होने लगता है। ऐसे मनुष्य
अंतर्बाह्य निर्मल होते है। अध्ययन-अध्यापन,
दान-पुण्य, हरिकीर्तन में रुचि, निष्काम समाज
सेवा आदि गुण दिखते है। साधु संतों की
महात्माओ की सेवा मे उन्हे रुचि निर्माण होती
है। वे आत्म चिंतन में रत होते हैं।

४. एकाग्र अवस्था : विक्षिप्तावस्था मे मनुष्य
जब गुरु उपदिष्ट पद्धति से योग मार्ग पर
चल पडता है तब धीरे धीरे अभ्यास द्वारा
उसका अपने लक्ष्य की ओर चित्त एकाग्र
होता है। दिन रात एक ही चिंतन चलते रहता
है। "आत्मावारे द्रष्टव्यः, श्रोतव्यः, मंतव्यः,
निदिध्यासितव्याः।" यह निदिध्यासितव्याः की
अवस्था ही एकाग्रता की अवस्था है। एकाग्रता
को ही संप्रज्ञात समाधि भी कहते हैं।

५. निरूद्धावस्था : संप्रज्ञात समाधि माने
एकाग्रता की अवस्था मे चित्त स्वस्वरूप की ओर
लगा रहता है, किंतु चित्त में अन्य वृत्तियों का
उद्भव भी शुरु रहता है। यहां एक बात विशेष
ध्यान देने लायक है कि चित्त को वृत्तियों का
पूर्णतः निर्मूलन नही होता, उनका निरोध होता
है। त्रिगुणों की विषमता के कारण जब चित्त
निर्माण होता है, और इन गुणों के कम अधिक
होने से वृत्तियों के प्रवाह बदलते रहते है तो
चित्त की वृत्ति रहित अवस्था मे सर्वदा रहना
असंभव बात है। वृत्तियां चित्त से ही जुडी हुई
है। कुछ वृत्तियों का निरोध सप्रज्ञात समाधि
मे होता है। किंतु कुछ वृत्तियों का प्रवाह बना ही
रहता है। योग की परिभाषा करते समय भगवान
पतंजलि ने "सर्व चित्त वृत्ति निरोधः" ऐसा शब्द
प्रयोग नही किया है। केवल "चित्त वृत्ति

निरोधः" ऐसा ही लिखा है। इसका अर्थ यह हुआ कि एकाग्रता की अवस्था में जानेवाले साधक को भी योग प्राप्त हुआ है। उसके माने यह नहीं है कि सर्वचित्त वृति निरोध की अवस्था रहती ही नहीं। वह रहती है। वह मनुष्य जन्म में प्राप्त होनेवाली अवस्थाओं में अंतिम अवस्था है। जिसका वर्णन पतंजल योग सूत्र के ५१ वें सूत्र मे किया गया है। वह है–

"तस्यापि निरोधे सर्वनिरोधान्निर्बीजः समाधिः"।

संप्रज्ञात समाधि से ऊपर उठकर जब असंप्रज्ञात समाधि की ओर साधक बढता है तब उसकी बुद्धि सत्य से भर जाती है। सब प्रकार की भ्रांति तथा अविद्या आदि क्लेश नष्ट हो जाते है। और चित्त वैराग्य के संस्कारों से भर जाता है। यहां पर वैराग्य के सस्कारों का भी निरोध होने पर निर्बीज समाधि होती है। इस अवस्था में संपूर्ण वृत्ति प्रवाहों का और सस्कारों का निरोध हो जाता है। (लेखक को इस निर्बीज समाधी की अवस्था का अनुभव नही है)।

कुछ बंधुओं की ऐसी धारणा है कि "पातंजल" योग" केवल "हठ योग" ही है। इसका भक्ति से कोई संबंध नही है। यह धारणा हमें उचित नही लगती। भक्ति के जो नौ प्रकार दिए गए है– श्रवण, कीर्तन विष्णुस्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य, तथा आत्म निवेदन। उनमें आत्म निवेदन यह नवम् प्रकार है। वही सर्वश्रेष्ठ भक्ति मानी जाती है। आत्म निवेदन मे अपने ईश्वर को आत्म समर्पण करना ही विहित है। आत्म समर्पण के मायने चित्त समर्पण ही है। क्योंकि ईश्वर आत्मा पुरुष आदि सब नाम समानार्थी ही प्रयोग किए जाते है। जो आत्मा सर्वव्यापी, नित्य, परिणामशून्य तथा त्रिगुणों से रहित है उसको ही विष्णु, शिव आदि देवताओं के रुप मे मानकर भक्ति की जाति है। वह उपासना की पद्धति है। उद्दिष्ट तो आत्मानुभूति प्राप्त करना ही है। काम क्रोधादि षड्रिपुओं से ग्रसित यह चित्त– जिसमें पंचभौतिक स्थूल देह से लेकर शुद्ध सत्वमयी बुद्धि तक सब कुछ अंतर्भूत है– धीरे धीरे भक्ति द्वारा शुद्ध होते जाता है और भक्त को उस परमात्मा के दर्शन होते है। भक्तों की उत्कंठा सगुण तथा साकार दर्शन की रही है यह शबल ब्रह्म का ही दर्शन है। भक्ति मार्ग में मुख्य साधन नाम स्मरण का दिया गया है। भक्त जिस भगवान का नाम लेता है उसका स्मरण भी सदैव करता है। भक्ति मार्गी साधक ऐसा कहते हैं कि नाम स्मरण जैसा सहज साधन और दूसरा कोई नहीं है। इस साधन को वे सर्वोपरि मानते है। और योगादि की बात छिडने पर ऐसा कहते है कि हमको तुम्हारे प्राणायाम, ध्यान, समाधि आदि जटिल बातों से कुछ लेना देना नहीं है। उससे जो प्राप्त नही हो सकता वह हमारे नाम स्मरण से ही प्राप्त होता है। यह धारणा योग की यथार्थ जानकारी न होने के कारण निर्माण हुई है। भगवान श्री कृष्ण द्वारा कही गई श्रीमद् भगवतद्गीता सब उपनिषदों का निचोड है।

सर्वोपनिषदो गावो।
दोग्धा गोपाल नदनः ॥
पार्थोवत्स सुधिर्भोक्ता।
दुग्धं गीतामृतम् महत् ॥

गीता मे ज्ञानयोग (सांख्य) और कर्मयोग (राजयोग) इन दोनों निष्ठाओं का उल्लेख है। भगवान श्रीकृष्ण ने भी सांदीपनी मुनि के आश्रम में रहकर योगाभ्यास किया ही था। सांख्य और योग ये दोनों एक ही है ऐसा भगवान कहते है। "साख्य योगौ पृथग्बाला प्रवदति न पंडिताः" । एकमप्यास्थितः सम्यग उभयोर्विदते फलम ।।" इतना ही नही योगाभ्यास कैसे करना चाहिए इस विषय में भगवान कहते है –

"शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य स्थिरमासनमात्मनः
नात्युच्छ्रितं नाति नीच चैलजिन कुशोत्तरम्
तत्रैकाग्रम मनः कृत्वा यतचित्तेंद्रियक्रियः
उपविश्यासने युञ्ज्यादयोगमात्मविशुद्धये ।।"

आगे के भी श्लोकों में–

सर्वभूतस्थमात्मानम् सर्वभूतानि चात्मनि ।
ईक्षते योगयुक्तात्मा, सर्वत्र सम दर्शनः ।।

इस श्लोक तक योगाभ्यास कैसे करना, उससे क्या फल प्राप्त होता है यह सब बतलाया है। भगवान श्रीकृष्ण के समय में केवल दो दर्शन ही बहुत महत्व के माने जाते थे।

१– कपिल मुनि द्वारा प्रणीत सांख्य, और
२– पतंजलि प्रणीत योग

अर्जुन को उपदेश करते समय भगवान ने इन्ही दो निष्ठाओं का उपदेश किया हैं। याज्ञवल्क स्मृति तथा महाभारत में कहा गया है.–

साख्यस्य वक्ता कपिलः परमर्षिः स उच्यते ।
हिरण्यगर्भो योगस्य वक्ता नान्यः पुरातनः ।।

माने सांख्य के वक्ता महर्षि कपिल तथा योग के वक्ता प्रत्यक्ष हिरण्यगर्भ (ब्रह्मा) ही हैं।

श्रीकृष्ण तो भगवान श्री विष्णु के अवतार हैं। वह भी स्वयं योगाभ्यास करते है और योग का माहात्म्य बतलाते है।

भगवान पतंजलि प्रणीत योग दर्शन में भी ईश्वर भक्ति का विधान है। समाधि पाद के सूत्र क्रमांक २३ में उन साधकों के लिए जो समाधि का अभ्यास नही कर सकते एक अन्य उपाय भी बतलाते है।

ईश्वर प्रणिधानाद्वा

अर्थात ऊपर के सूत्रों मे दिए ध्यानादि के मार्ग से यदि आप अभ्यास नही करना चाहते तो ईश्वर भक्ति से भी यह योग प्राप्त हो सकता है। वे आगें सूत्र क्रमांक २७ में बतलाते हैं –

तस्य वाचकः प्रणवः

अर्थात उस ईश्वर का वाचक (बोधक) नाम प्रणव माने "ॐ" है। नाम स्मरण की विधि सूत्र २८ में बतलाई है। "तज्जपस्तदर्थ भावनम्"। अर्थात इस प्रणव का बार बार चिंतन करके उसका अर्थ सदैव ध्यान मे रखते हुए मानसिक जप करना ईश्वर भक्ति है। नाम स्मरण के जप से क्या फल मिलता है वह सूत्र २९ में बतलाया है।

ततः प्रत्यक्चेतनाधिगमोऽप्यंतरायाभावश्च ।।

अर्थात इस प्रकार से ईश्वर का नाम स्मरण सदैव करने से चित्त शुद्ध होकर आत्म साक्षात्कार होता है और भक्ति मार्ग में (साधना मार्ग मे) आनेवाली सब बाधाओं का नाश भी होता है।

पातंजल योग सूत्रों मे केवल अष्टांग योग का ही प्रतिपादन नही है। विभिन्न अवस्थावाले

अधिकारी साधकों के लिए उसमें दो प्रकार के मार्ग बतलाये हैं। जिनमें समाधि प्राप्त करने हेतु तीव्र लगन पैदा हुई है ऐसे साधकों के लिए समाधिपाद में मार्ग बतलाया है। सूत्र क्रमांक २० (समाधिपाद) में कहते हैं–

श्रद्धावीर्यस्मृतिसमाधिप्रज्ञापूर्वक इतरेषाम्।

इस सूत्र के पहले भगवान पतंजलि कहते हैं कि जिस साधक का गत जन्म विदेह या प्रकृतिलय अवस्था तक अभ्यास हो गया हो उसे यह योग जन्म से ही प्राप्त होता है। विदेह शब्द से आनंदानुगत संप्रज्ञात समाधि का बोध होता है–जिस अवस्था में साधक विचारानुगत संप्रज्ञात समाधि को पार करके सत्वगुण प्रधान चित्त की अवस्था में पहुंचता है, उसके मन में जो पाना है उसके प्रति तर्क और विचार नहीं उठते। सत्वगुण की प्रधानता के कारण वह आनंद का ही अनुभव करता है। ऐसे सत्वगुणयुक्त अहंकार को साक्षात करनेवाले और उसमें आनंद का अनुभव करनेवाले साधक को विदेह कहते हैं

इससे भी ऊपर अपने अभ्यास द्वारा जो पहुंचते हैं, वे अहंकार को तो पार कर लेते हैं किंतु अविद्या के संग से निर्माण होनेवाली अस्मिता को जो अहंकार का कारण है – पार नहीं कर सकते, उनको प्रकृतिलय कहते हैं।

इसलिए भगवान पतंजलि निम्नलिखित सूत्र देते हैं।

भवप्रत्ययो विदेहप्रकृतिलयानाम्

इस सूत्र के बाद का सूत्र जो श्रद्धा, वीर्य, आदि है वह उपर्युक्त जो विदेह या प्रकृतिलय अवस्था को गत जन्म में नही पहुंचे, उन साधको को श्रद्धा, वीर्य, स्मृति तथा समाधि का अभ्यास और विवेक ज्ञानसे योग का अभ्यास करना चाहिये।

श्रद्धा – अपने सद्‌गुरू द्वारा बतलाये हुए पद्धति से 'सत्' को दृढता से धारण करना ही श्रद्धा कहलाती है।

वीर्य :– श्रद्धा के कारण योगाभ्यास कराने में जो उत्साह निर्माण होता है, जो साधक को निरतर अभ्यास कराने में सहायक होता है, उसे वीर्य कहते हैं।

स्मृति :– जब साधक अपने गुरूदेव से अनुग्रह प्राप्त करने के बाद उनके बताए गए मार्ग से साधना शुरू करता है तो गत जन्ममें इस विषय में जो कुछ भी अभ्यास किया होगा, उससे निर्मित सब संस्कार जो अभी तक चित्त में दबे हुए थे, जागृत होकर अपना फल देना शुरू कर देते हैं। इसे ही स्मृति कहते है।

समाधिप्रज्ञा :– निरंतर अभ्यास के कारण साधक का चित्त पहले की अवस्थाओं से शुद्ध होकर एकाग्र अवस्था में जाता है और समाधि की शुरुआत होती है। समाधि के निरंतर अभ्यास से प्रसंख्यान (विवेक ख्याति) पैदा होती है और उसके कारण वह साधक त्रिगुणात्मक चित्त को पारकरके अपने स्वरूपस्थिति को पाता है।

प्राणायामादि मार्ग से न जाते हुए समाधि पाद में बताए गए मार्ग से भी योग्य अवस्थावाला साधक समाधि को प्राप्त हो सकता है।

ऊपर को हुई चर्चा से यह स्पष्ट होगा कि स्वस्वरूप का अनुसंधान करना भक्ति और योग दोनों का उद्दिष्ट है।

'स्वस्वरूपानुसंधानम् भक्तिरित्यभिधीयते ।'

अर्थात अपने स्वस्वरूप का माने आत्म स्वरूप का अनुसंधान करना (जो समाधि का ही अभ्यास है) उसे ही भक्ति कहते हैं ।

दास बोध में समर्थ रामदासस्वामी कहते हैं–

जालियां तत्वाचें निरसन ।
निर्गुण आत्मा तोचि आपण ।
का दाखवा मीपणवें ।
तत्वनिरसनाउपरी ॥ ३० ॥
तत्वांमध्ये मीपण गेले ।
तरी निर्गुन सहजचि उरलें ।
सोहंभावे प्रत्यया आले ।
आत्मनिवेदन ॥ ३१ ॥ द (छे. स. ३)

यह मानव शरीर २४ तत्वों का बना हुआ है । पांच ज्ञानेंद्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां, पंचमहाभूते, पांच तन्मात्राएं, तथा मन बुद्धि, अहंकार और चित्त ये चौवीस तत्व हैं । इन इन सब को लांघकर जिससे यह सब प्रकाशित हो रहा है वह है आत्म तत्व । उपर्युक्त मराठी तत्वोक्ति का अर्थ इस प्रकार होगा, साधना द्वारा सब तत्वों को लांघने के पश्चात आत्मस्थिति को साधक प्राप्त होता है । वहां उसका भिन्नत्व नहीं रहता । साधक का अहकार नष्ट हो जाने पर, त्रिगुणों की साम्यावस्था होने पर चित्त निर्माण का प्रयोजन समाप्त हो जाने के कारण वह लय हो जाता है । और साधक आत्मस्थिति में जाता है । यही आनिवेदन है

योग और भक्ति का यह विश्लेषण स्पष्ट रुप से यह दर्शाता है कि, इन दोनो मार्गों में यदि भिन्नता होगी तो केवल माध्यम की । भक्ति में भावना प्रधान होती है, तो राजयोग में बुद्धि । और कर्मयोग में कर्म ।

इसलिए यहां यह कहना अनुचित नही होगा –

भक्ति योगौ पृथग्बाला:
प्रवदंति न पंडिता: ।

❀

भगवान यमराज नचिकेता से कहते हैं—

न नरेणावरेण प्रोक्त एष सुविज्ञेयो बहुधा चिन्त्यमानः ।
अनन्य प्रोक्ते गतिरत्र नास्ति अणीयान ह्यतर्क्यमणु प्रमाणात ॥

प्रकृति पर्यंत (अलिङग् पर्यंत) जो भी सूक्ष्मातिसूक्ष्म तत्व है, यह आत्मतत्व उससे भी सूक्ष्म है । यह इतना गहन है कि जबतक इसे यथार्थरुपसे समझानेवाले कोई महापुरुष नहीं मिलते, तब तक मनुष्यका इसमें प्रवेश पाना अत्यंत ही कठिन है । साधारण ज्ञान वाले यदि इसे बतलाते है और उसके अनुसार यदि कोई विविध प्रकारसे इसके चिंतनका अभ्यास करता है, तो उसका आत्मज्ञानरुपी फल नहीं होता । आत्मतत्व किंचित मात्र भी समझमें नहीं आता । केवल अपने आप तर्क वितर्क करने से भी यह समझमें नही आता । जो इसे भलीभांती जाननेवाले महापुरुष हो उनसेही सुनकर यह समझमें आ सकता है ।

प. पू. तिवारी महाराज के ८४ वे जन्मदिवस पर हमारी शुभ कामनाये

श्री साईबाबा गुड्स गेरेज, वर्धा

परम पूज्य गुरुदेव श्री तिवारी महाराज के चरणों में सादर प्रणाम !

मे. राज एंड संस वर्धा

आत्मज्ञानी संत श्री तिवारी महाराज के ८४ वे जन्मदिवस पर
हमारी शुभकामनायें

व्यंकटेश एंटरप्राइसेस, वर्धा

परम पूज्य गुरुजी के श्री चरणो में कोटिश: नमन

वंदना क्लाथ स्टोर्स, वर्धा

पू. गुरुदेव की कृपा

एक साधक का अनोखा अनुभव

रमेशचन्द्र मिश्र, उप निरीक्षक, कोतवाली, रायपुर

मैं परम् पूज्य गुरुदेव की शरण में १५-१०-११८९ से आया। सन् ८९ में थाना प्रभारी पेण्ड्रा था। माह अक्टूबर के पूर्व मेरी पहचान श्री गोस्वामी एवं वीरचंदजी जैन से हुई। इनके माध्यम से परम पूज्य गुरुदेप की पुस्तक दिव्याम्बुनिमज्जन पढने को मिली। पुस्तक में गुरुदेव का फोटो देखने पर ऐसा महसूस हुआ कि मैं गुरुजी को कई जन्मों से जानता हूं। श्री गोस्वामीजी से दीक्षा दिलाने का निवेदन किया उसी दरम्यान गुरुदेव श्री डी पी. शर्माजी के यहां पहुंचे और परिचय के बाद दीक्षा मिली।

अनुभूतियां– दीक्षा के रोज परम पूज्य श्री गुरुदेव ने अपने सामने ध्यान कराया। उसी समय मुझे ध्यानपद्धति से उनके दर्शन लाभ हुए। तीसरे दिन मे गोरखपुर मैं अपने निवास में सोया था। मेरी बहू और नाती भी सोए थे। रात में देखा कि मेरी बहू और नाती आग में जल गए है। मैं जलती आग से उन्हें निकाल रहा हूं। वे पूर्णतः जल गए हैं। सुबह ६.०० बजे मैं जागा तो मेरी बहूने शिकायत की, "रात मेरी साडी के पल्लू मे सोते समय आग लग गई थी और मैं चिल्ला रही थी पर कोई नही आया"। बहू की साडी मे आग लगी। जलते जलते जब बदन के पास पहुंची कि अचानक उसकी नींद खुली और उसने आग बुझा दी। एक बहुत बडी दुर्घटना प्रभु की कृपा से टल गई। उन करूणा के सागर ने मेरी बहू व नाती की जीवन रक्षा की।

१३ जनवरी १९९० को मैरा एक हेड कांस्टेबल अशोक सिह, आर. गोविंद देव पांडे, श्रवन कुमार गर्ग सभी चुनाव मीटिंग व्यवस्था हेतु पेन्ड्रा से बस द्वारा जरहा गांव बिलासपुर जाने के लिए केसरी बस मे बैठें, उस दिन मैं ४-०० बजे सुबह से उठ कर ध्यान व नित्य क्रिया से निवृत्त हो चुका था। अमूमन मुझे ध्यान मे अपने प्रभू गुरुदेव श्रीके चरण या चेहरा या आशीर्वाद देता हुआ हाथ दिख जाता था परंतु १३-९-९० के दो चार दिन पूर्व से ही दर्शन नहीं हो रहे थे, मेरा मन काफी चंचल था परंतु लगन थी। मैं बस में ड्राइवर के बाई ओर पहिली सीट में बैठा। मेरे पीछे की सीट में एच. सी. अशोक सिह तथा श्रवण कुमार बैठे थे। सिपाही गोविंद देव कुछ देर से आया। वह कैबिन के बाहर पहिली सीट में बैठ गया। बस चल पडी। मैं बगल की खिडकी के कांच लगाकर गुरुदेव के ध्यान में आसीन हो गया। ८ कि. मी. बाद झलेली बस स्टेंड में बस रूकी। वहां आंखे खोला। कुछ देर बाद फिर चली तो मैं पुनः उसी कुर्सी मे बैठे ध्यानस्थ हो गया। थोडी

बारिस हुई । सडक गीली हो गई । १० कि. मी. बाद बिलासपुर की ओर से (लोगों से पूछने पर) ५–६ मारुती कारें आई । ड्राइवर उन्हें साइड देने को गाडी किनारे किया । किनारे पर कच्ची मिट्टी थी । बस स्लिप हुई कि ड्राइवर ने रोड मे लाने हेतु अगले चक्के को घुमाया । सडक के किनारे डामर के खाली ड्रम गडे थे । अगला चक्का उससे टकरा गया और बस उलट गई । एक बार पल्टी हुई उसके बाद नाले मे ढलान के कारण पुनः पल्टी हो कर चक्के ऊपर हो गए । बस में करीब ८० सवारियां थी । इतनी बडी घटना घटी । मुझे कोई जानकारी नही है । मैं ध्यानस्थ था । ध्यान इतना गहरा था कि पता ही न चला । बस पलट जाने पर बस के रेडियेटर का गरम पानी मेरे सिर में गिरा तब होश आया । उस समय पीछे डाला में बैठे यात्रियों का रुदन विलाप सुना । आंखे खोला तो बस पल्टी हुई देखा घबराकर आवाज निकली हे गुरुदेव, हे प्रभू, बचाओ । मैंने घबराहट महसूस की कुछ देर तो होश ही नही रहा फिर ड्राइवर को सीट के पास लेटकर सडक में आया । बाहर आकर अन्य यात्रियों को निकाला । बस मे एक महिला यात्री की गले की हड्डी खिसक गई थी । गोविंद देव सिपाही का सामने का दांत टूट गया था । बाकी लोगों को साधारण चोटे थी । मुझे कोई चोट नही आई । बस में ध्यान के समय जब गुरुदेव के दर्शन नहीं हुए तो सोच रहा था कि जब कुछ दिख नहीं रहा है, गुरुजी के दर्शन नही हो रहे है तो यह शरीर व्यर्थ है इससे तो मर जाना ही ठीक है बस ऐसा सोचते समय ही बस पल्टी थी । प्रभु श्री गुरुदेव द्वारा मुझे जीवनदान दिया गया । मुझे ज्योतिषी लोगों ने बतलाया था कि ४२ से ५० के बीच जीवन को खतरा है । यह अल्प प्रभु ने काटी है । निरंतर प्रभु चरणों में श्रद्धा, विश्वास और लगन से ध्यान करते रहने से गुरुदेवजी सर्णपू बाधाएं दूर करते हैं । मेरे अलावा सभी बस यात्रियों की भी रक्षा की ।

प्रभु को शत् शत् प्रणाम ।

❀

भगवान यमराज नचिकेतासे कहते है—

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन ।
यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनूं स्वाम ॥

–जिन परमेश्वर की महिमा का वर्णन मैं कर रहा हूं, वे न तो उनको मिलते है, जो शास्त्रों को पढ़सुनकर लच्छेदार भाषामें नाना प्रकारसे वर्णन करते है, न ही उन तर्कशील मनुष्यों को मिलते है, जो बुद्धि के अभिमान मे प्रमत्त हुए तर्क के द्वारा विवेचन करके उन्हे समझने की चेष्टा करते हैं । जो बहुत कुछ सुनते रहते है ऐसे मनुष्यों को भी वे नही मिलते । वे तो उसी को प्राप्त होते हैं, जिसको वे स्वयं स्वीकार कर लेते है और जिसको उन्हे पाने की उत्कट इच्छा होती है ।